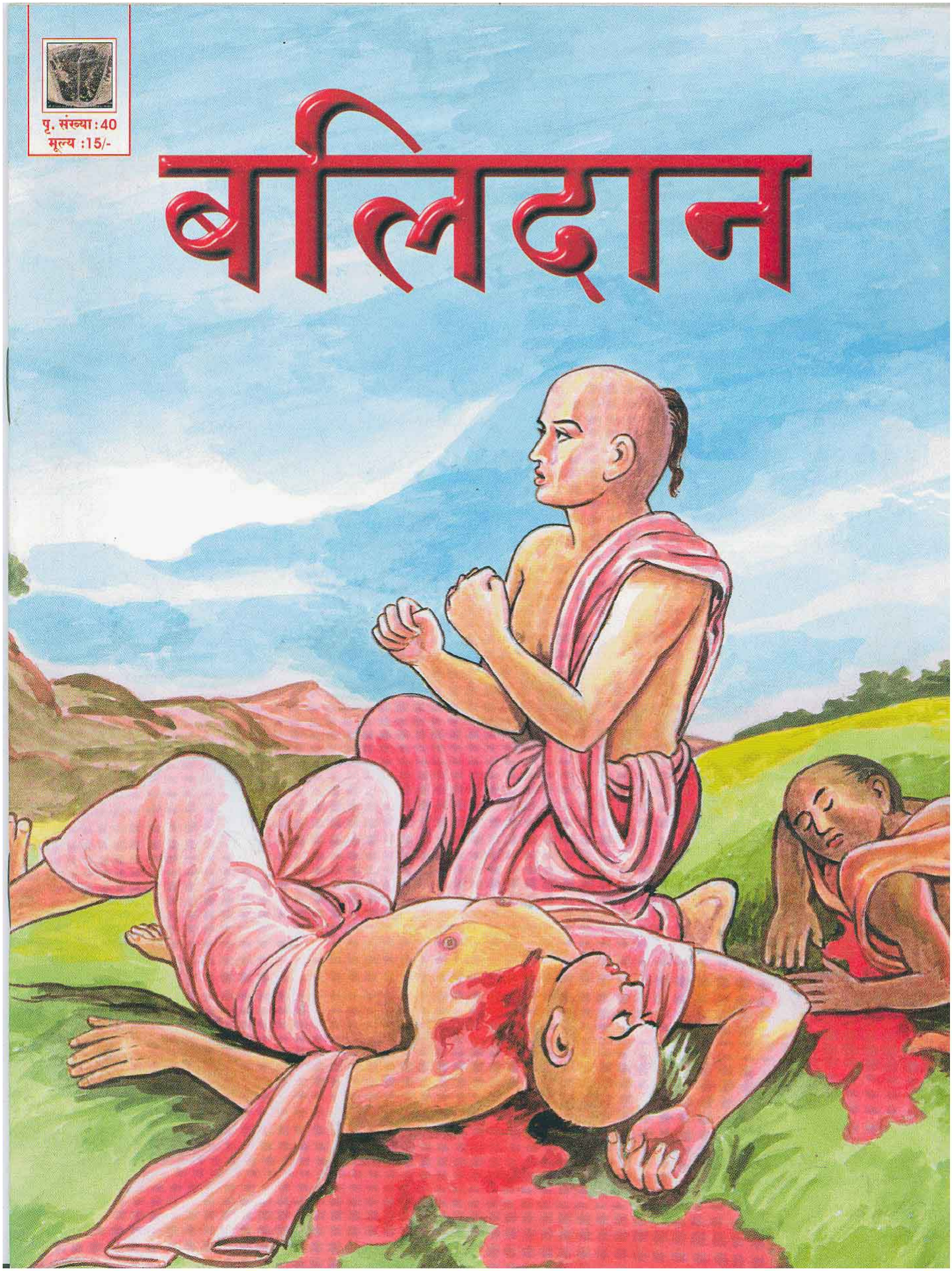
पृ. संख्या : 40
मूल्य : 15/-
बलिदान

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

प्रकाशकीय

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्यश्री कानजी स्वामी के सदुपदेश के प्रभाव से अनवरत रुप से चली आ रही तत्त्वज्ञान की धारा को आगे बढ़ाने के लिए **सूरजबेन अमुलखभाई शेठ समृति ट्रस्ट** एवं **श्री आचार्य कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई** कृत संकल्पित हैं और उसी कड़ी में स्वामीजी के सी.डी. प्रवचन, आडियो प्रवचन एवं प्रवचन साहित्य का प्रकाशन करके उसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य ये ट्रस्ट निरंतर कर रहे हैं।

जिनागम के चार अंगों में से एक अंग प्रथमानुयोग और उसके अन्तर्गत आने वाले पुराण ग्रंथों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, नारायण एवं बलदेव आदि महापुरुषों के जीवन चरित्र का बड़ा ही प्रेरणादायक और वैराग्यप्रद वर्णन होता हैं, जो वर्तमान में हमारे इस उतार-चढ़ाव भरे जीवन में बहुत ही उपयोगी हो सकता है, लेकिन पुराण ग्रंथों के विशाल आकार-प्रकार एवं उनमें महापुरुषों के जीवन चरित्र का अलंकारिक शैली व उपमाओं आदि के साथ में वर्णन होने के कारण यह कार्य कुछ असाध्य हो जाता है। पुराण ग्रंथों की इसी विशालता के कारण ही उनका सम्पूर्ण अध्ययन तथा महापुरुषों के जीवन में घटी हुई घटनाओं का सम्यक् ज्ञान, हमें अपनी इस दौड़-भाग भरी जिन्दगी में आसानी से नहीं हो पाता है। साथ ही साथ पुराण ग्रंथों का अति अल्प प्रकाशन होने से तथा उनकी न्यौछावर राशि (मूल्य) अधिक होने के कारण भी जिनधर्म में आया हुआ महापुरुषों के जीवन का यथार्थ परिचय हमें नहीं हो पाता है और उस अज्ञान दशा में हम **लोक प्रचलित एवं कपोल-कल्पित कल्पनाओं को** ही सच्चा मानकर उनके जीवन चरित्र के संबंध में वैसी ही धारणा बना लेते हैं।

इन्ही कठिनाईयों को दूर करने के लिए तथा बाल (अज्ञानी) से लेकर गोपाल (बच्चों) तक सभी को महापुरुषों के जीवन चरित्र का अच्छी तरह से ज्ञान हो सके और उसके माध्यम से प्रेरणा लेकर, हम अपने जीवन में घटने वाली प्रत्येक खुशी और गम के प्रसंग पर समताभाव रखकर अपना कल्याण कर सके, इसी भावना के साथ में सचित्र कथाओं की एक श्रृंखला हम आरम्भ करने जा रहे है जिसमें लगभग 50 चित्रकथाओं के लेखन का सम्पूर्ण कार्य संदीप कुमारजी के द्वारा किया गया है और वर्तमान में उन कथाओं के चित्रांकन का कार्य भी तीव्र गति से चल रहा हैं। इसी कडी में आपके समक्ष प्रथम दो अंक **'बलिदान'** (अकलंक-निकलंक) और **'कामदेव प्रद्युम्न'** प्रस्तुत हैं।

हमारा सदा ही यह प्रयास रहता है कि अनादिकाल से तीर्थंकर भगवान एवं आचार्यों के द्वारा चली आ रही दिव्य ज्ञान गंगा तथा वर्तमान में गुरुदेवश्री के द्वारा जिनवाणी के अमर प्रेम के रुप में प्रवाहित ज्ञान गंगा अपने क्रमबद्ध विकास के रुप में अविछिन्न बहती रहे और जन-जन के समीप तक पहुचें।

आप सभी के सामने चित्रकथाओं के ये दो प्रकाशन प्रस्तुत हैं। हम आगामी निकलने वाले अंकों को और भी उत्कृष्ठ व ज्ञानवर्धक कैसे बना सकते हैं इस सन्दर्भ में आपके दीर्घकालीन अनुभव से उत्पन्न सुझाव सादर निमंत्रित हैं और आशा है, आप अपने अनमोल सुझाव देकर हमे अवश्य अनुग्रहीत करेगें।

भवदीय
सूरजबेन अमुलख भाई शेठ समृति ट्रस्ट

प्रकाशक :

सूरजबेन अमुलखभाई शेठ समृति ट्रस्ट

218, वीणा विहार, सन्मुखानंद हॉल के बाजू में, सायन (ईस्ट)-मुंबई (महाराष्ट्र)-400022

मुद्रण एवं चित्रांकन व्यवस्था :- संदीप कुमार जैन (फोन): 09829376152 / (07689) 252086, 252253

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

Thanks & Our Request

This shastra has been donated in by Anonymous donors in California and Illonis, USA who have paid for it to be "electronised" and made available on the internet.

Our request to you:

1) Great care has been taken to ensure this electronic version of Akalank-Nikalanka Balidaan (Hindi) is a faithful copy of the paper version. However if you find any errors please inform us on rajesh@AtmaDharma.com so that we can make this beautiful work even more accurate.

2) Keep checking the version number of the on-line shastra so that if corrections have been made you can replace your copy with the corrected one.

Version History

Version Number	Date	Changes
001	12 May 2011	First electronic version

लेखन एवं चित्र परिकल्पना : -
संदीप कुमार जैन
सहयोग : - कु. आरती जैन

बलिदान

चित्रांकन:- बने सिंह,
रंग व सुलेख- कुमेर सिंह

आज से लगभग दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व बौद्धधर्म के गुरु अपने चमत्कारों एवं झूठे ज्ञान के बल से राजाओं को अपना शिष्य बनाकर जैनधर्म की फैली हुई विशाल संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करके अपने धर्म का साम्राज्य फैला रहे थे-

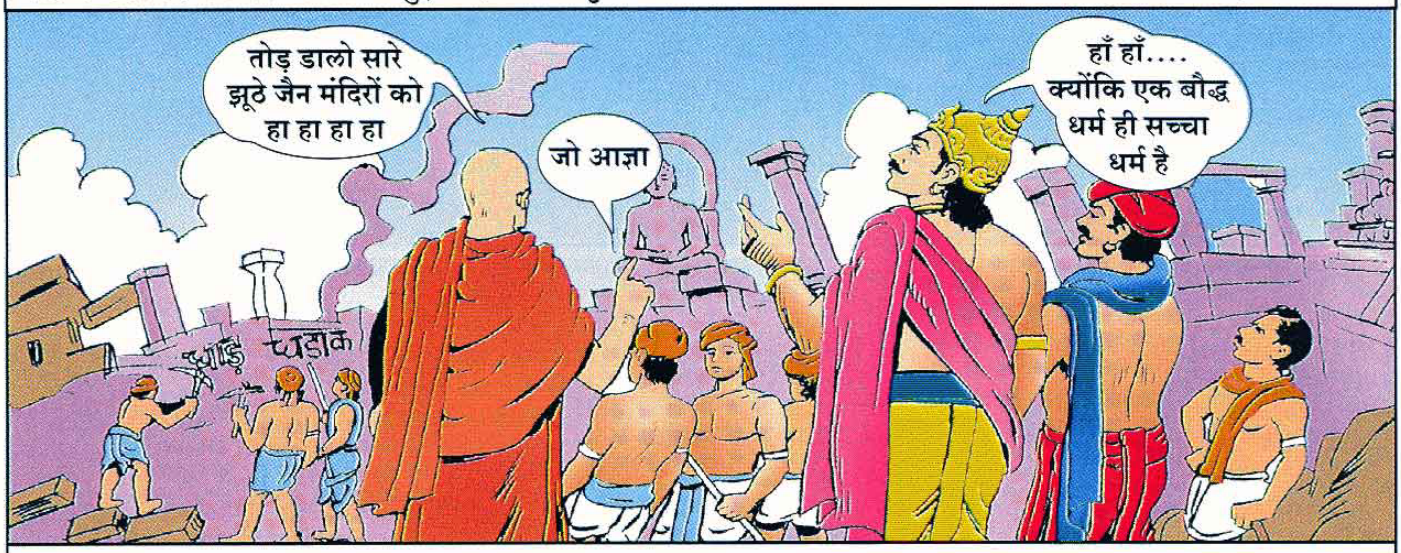

दूसरी ओर मान्यखेट नगर के उपवन में अनेक बालक मस्त होकर -

बलिदान

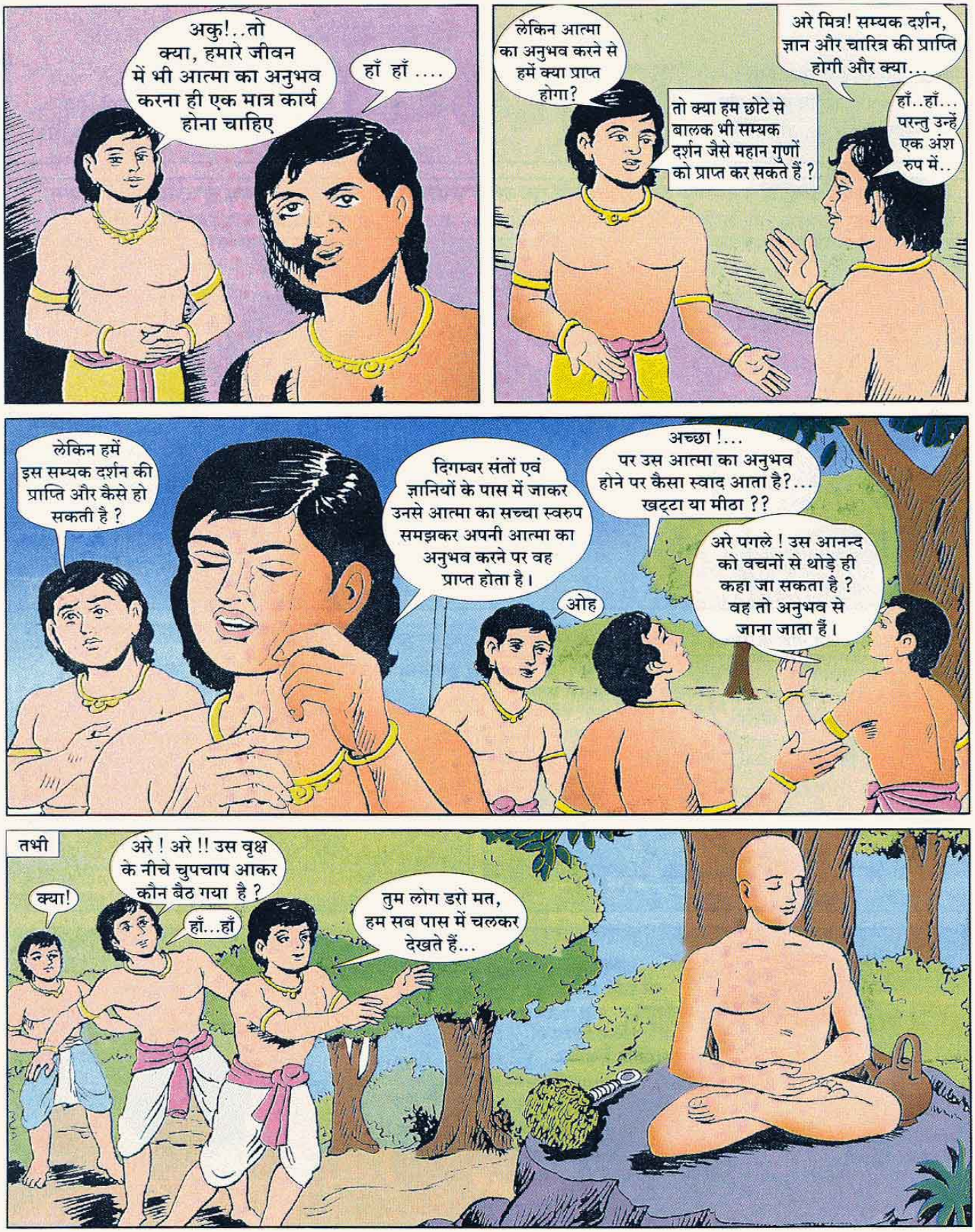
अकु!..तो क्या, हमारे जीवन में भी आत्मा का अनुभव करना ही एक मात्र कार्य होना चाहिए
हाँ हाँ ....
लेकिन आत्मा का अनुभव करने से हमें क्या प्राप्त होगा?
अरे मित्र! सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति होगी और क्या...
तो क्या हम छोटे से बालक भी सम्यक दर्शन जैसे महान गुणों को प्राप्त कर सकते हैं ?
हाँ..हाँ... परन्तु उन्हें एक अंश रुप में..
लेकिन हमें इस सम्यक दर्शन की प्राप्ति और कैसे हो सकती है ?
दिगम्बर संतों एवं ज्ञानियों के पास में जाकर उनसे आत्मा का सच्चा स्वरुप समझकर अपनी आत्मा का अनुभव करने पर वह प्राप्त होता है।
अच्छा !... पर उस आत्मा का अनुभव होने पर कैसा स्वाद आता है?... खट्टा या मीठा ??
ओह
अरे पगले ! उस आनन्द को वचनों से थोड़े ही कहा जा सकता है ? वह तो अनुभव से जाना जाता हैं।
तभी
अरे ! अरे !! उस वृक्ष के नीचे चुपचाप आकर कौन बैठ गया है ?
क्या!
हाँ...हाँ
तुम लोग डरो मत, हम सब पास में चलकर देखते हैं...

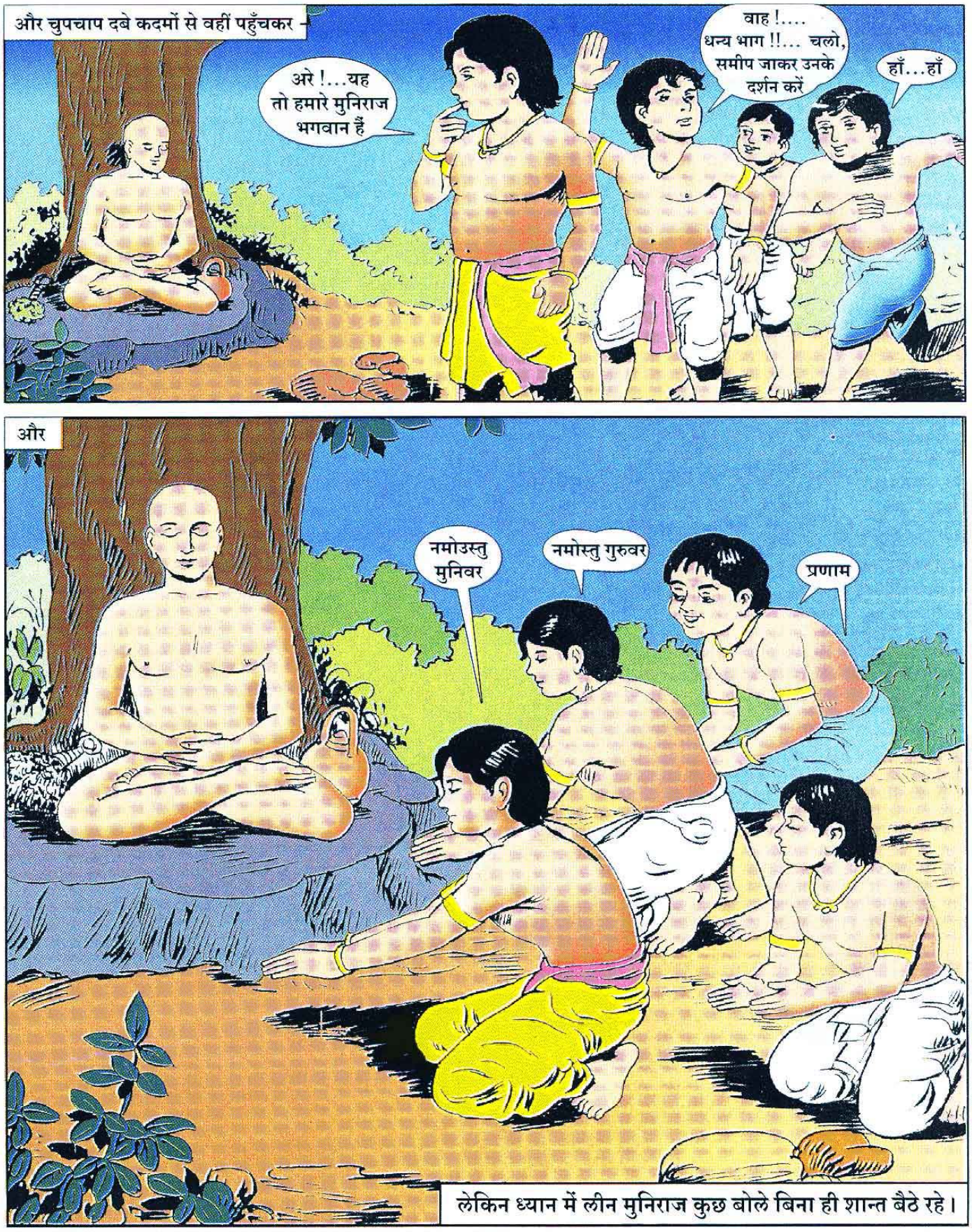
और चुपचाप दबे कदमों से वहीं पहुँचकर
अरे !....यह तो हमारे मुनिराज भगवान हैं
वाह !.... धन्य भाग !!... चलो, समीप जाकर उनके दर्शन करें
हाँ...हाँ
और
नमोउस्तु मुनिवर
नमोस्तु गुरुवर
प्रणाम
लेकिन ध्यान में लीन मुनिराज कुछ बोले बिना ही शान्त बैठे रहे।

बलिदान

तब
हमें शीघ्र यह समाचार सारे नगर में देना चाहिए
तो फिर चलो
हाँ
पिताजी ! पिताजी !! हमने वन में मुनिराजजी को देखा है।
हाँ..हाँ..
क्या!
वाह !अहोभाग्य !! दशलक्षण पर्व में नग्न दिगम्बर मुनिराज श्री के दर्शन मिलेगे आ हा हा..
और द्वारपाल को बुलाकर
जाओ... शीघ्र ही सारे नगर में वन में मुनिराज श्री के आगमन का ढिंढोरा पिटवा दो
जो आज्ञा...
तत्काल ही सारे नगर में-
सुनो...सुनो..सुनो
ढम ढम
और सारा का सारा नगर उन चित्रगुप्त मुनिराज के दर्शनों के लिए उमड पड़ा....
दिगम्बर संतो की
जय
चित्रगुप्त मुनिराज की
जय

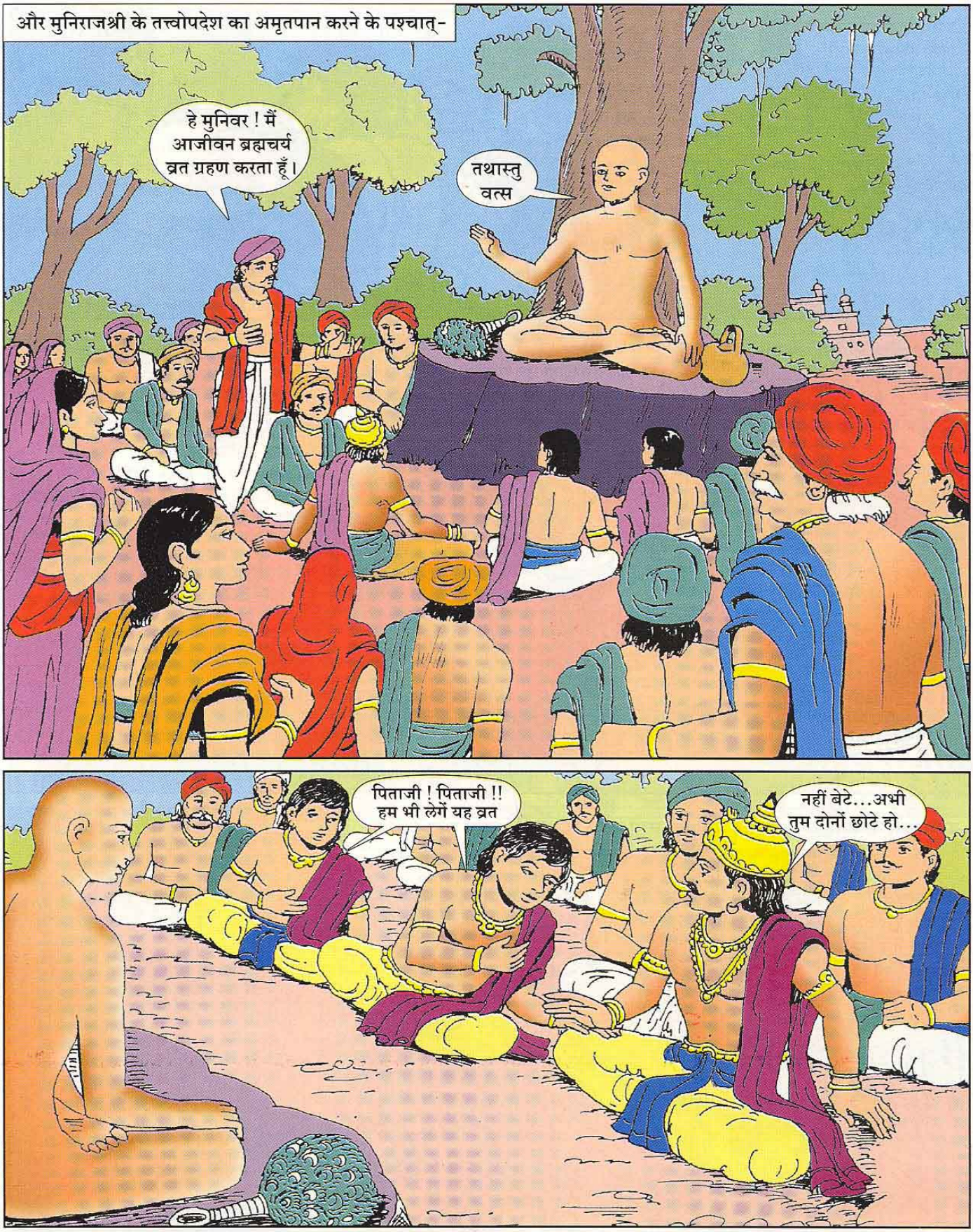
और मुनिराजश्री के तत्त्वोपदेश का अमृतपान करने के पश्चात्-
हे मुनिवर ! मैं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करता हूँ।
तथास्तु वत्स
पिताजी ! पिताजी !! हम भी लेगें यह व्रत
नहीं बेटे...अभी तुम दोनों छोटे हो...

और जब उनके हट के सामने उनकी एक ना चली तो-
वाह !
परन्तु पिताजी... हम तो व्रत लेगें ही
ओ हो हो... अच्छा बाबा...ठीक है, ले लो तुम भी व्रत...

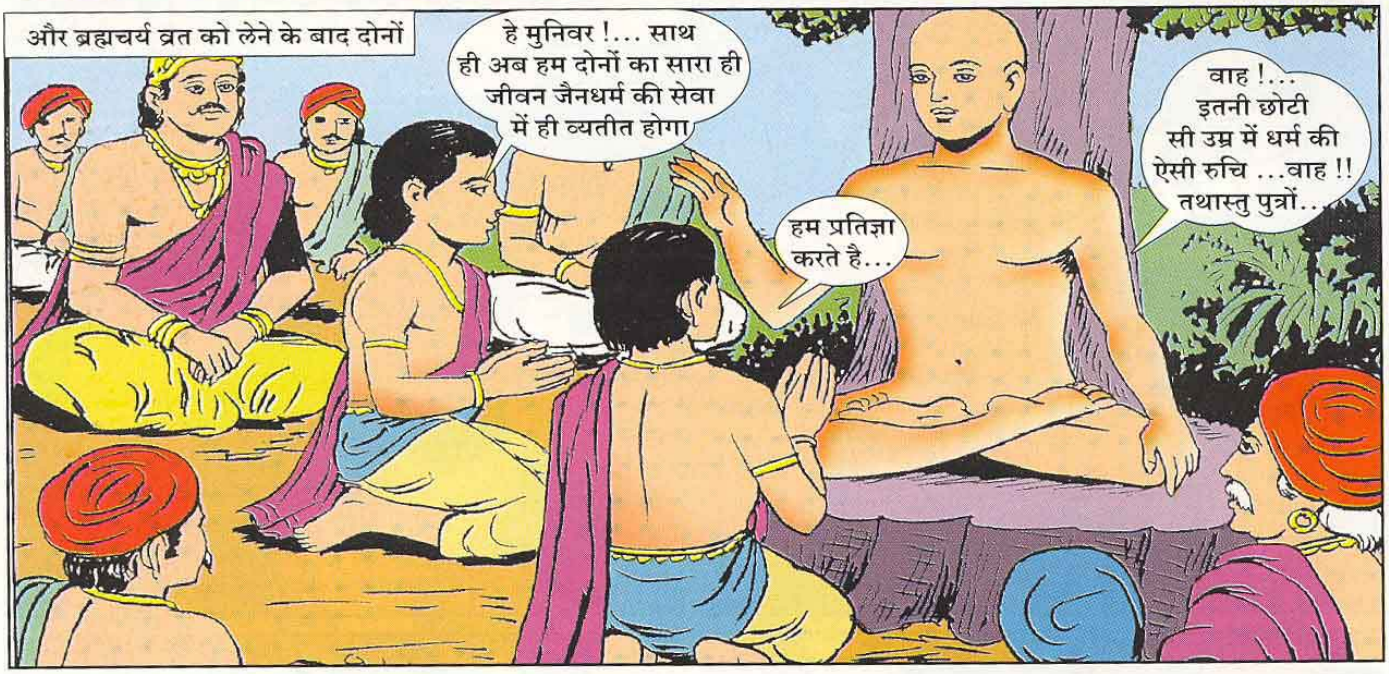
और ब्रह्मचर्य व्रत को लेने के बाद दोनों
हे मुनिवर !... साथ ही अब हम दोनों का सारा ही जीवन जैनधर्म की सेवा में ही व्यतीत होगा
हम प्रतिज्ञा करते है...
वाह !... इतनी छोटी सी उम्र में धर्म की ऐसी रुचि ...वाह !! तथास्तु पुत्रों...

इस घटना के बारह वर्षों के बाद मंत्री का सारा महल रोशनी से नहाया हुआ था कि-
पिताजी ! यह सब इतने जोर शोर से तैयारियाँ किस लिए हो रही है ?
क्या कोई राजा हमारे यहाँ पधारने वाले हैं ?...
नहीं अकु-निकु !... ये तो तुम दोनों के विवाह की तैयारियाँ हो रही हैं...

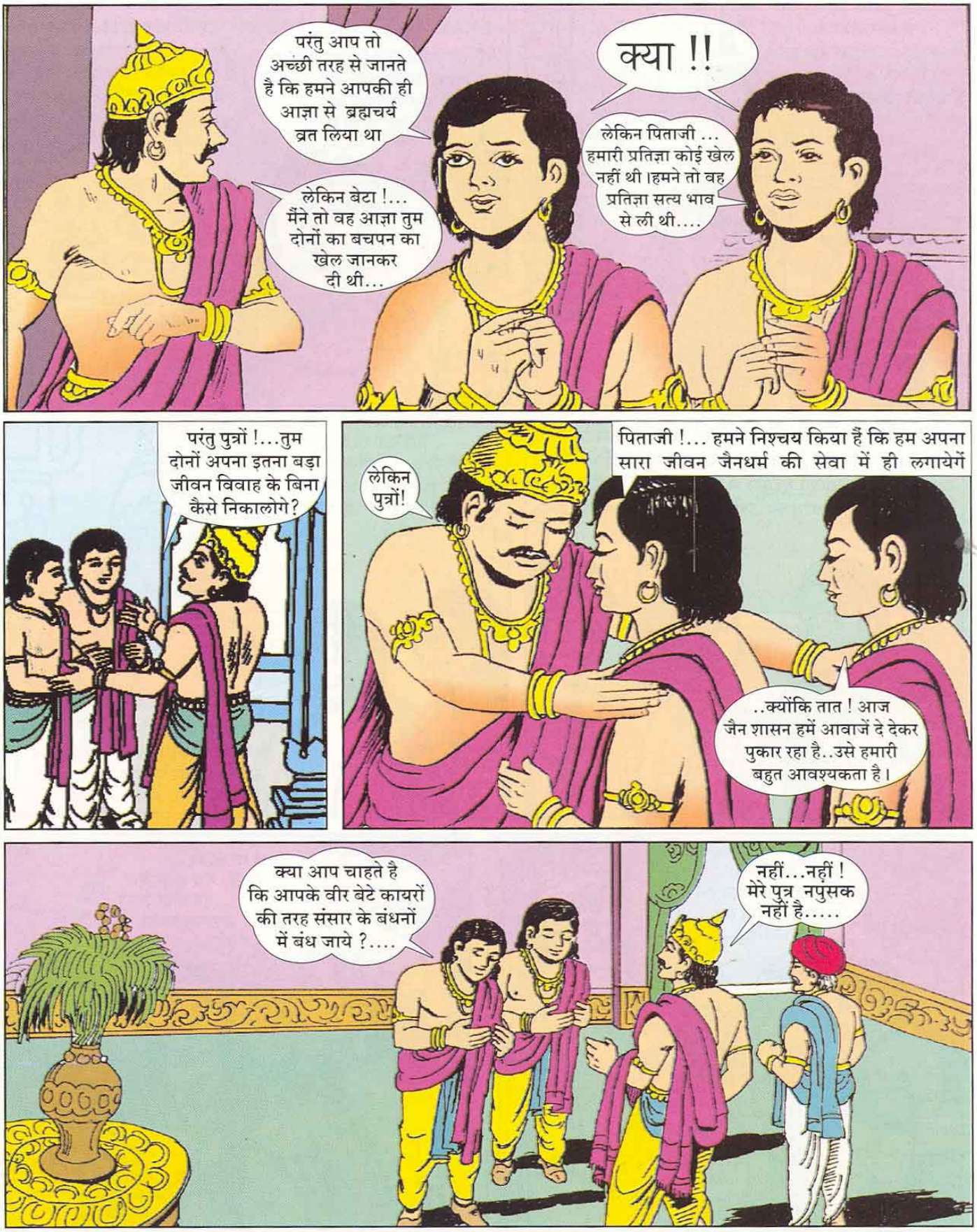
परंतु आप तो अच्छी तरह से जानते है कि हमने आपकी ही आज्ञा से ब्रह्मचर्य व्रत लिया था
लेकिन बेटा !... मैंने तो वह आज्ञा तुम दोनों का बचपन का खेल जानकर दी थी...
क्या !!
लेकिन पिताजी ... हमारी प्रतिज्ञा कोई खेल नहीं थी ।हमने तो वह प्रतिज्ञा सत्य भाव से ली थी....
परंतु पुत्रों !...तुम दोनों अपना इतना बड़ा जीवन विवाह के बिना कैसे निकालोगे?
लेकिन पुत्रों!
पिताजी !... हमने निश्चय किया हैं कि हम अपना सारा जीवन जैनधर्म की सेवा में ही लगायेगें
..क्योंकि तात ! आज जैन शासन हमें आवाजें दे देकर पुकार रहा है..उसे हमारी बहुत आवश्यकता है।
क्या आप चाहते है कि आपके वीर बेटे कायरों की तरह संसार के बंधनों में बंध जाये ?....
नहीं...नहीं ! मेरे पुत्र नपुंसक नहीं है.....

तो फिर आप हमें आशीर्वाद दीजिये कि हम अपने प्राणों का बलिदान देकर भी जिनधर्म की विजय पताका फहराए...
शाबाश मेरे बच्चों !... शाबाश !! तुम जैसे वीर पुत्रों को पाकर तो मैं निहाल हों गया ..।
हे तात !... आप तो जानते ही है कि आज किस प्रकार से एकांत धर्मी बौद्ध धीरे-धीरे हमारे जिनधर्म को नष्ट करते जा रहे है।
हाँ पुत्रो हाँ !...परंतु बौद्ध गुरु बहुत बड़े ज्ञानी एवं अपनी बात को सिद्ध करने में बहुत चतुर होते हैं इस कारण से वे दूसरे अन्य धर्मों को झूठा सिद्ध कर देते है और प्रजा उनके धर्म को मानने लग जाती है।
इसीलिए तो पिताजी ! अब हम जिनधर्म का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद एकांत मत के गहन अध्ययन के लिए बौद्धों की शिक्षा के सबसे बड़े मठ नालंदा गुरुकुल में जाना चाहते हैं। ताकि शत्रु के विद्या रुपी अस्त्रों को प्राप्त कर उन्हीं अस्त्रों से उनका सिर काट सकें।
सच कह रहे हो निकलंक ! ...क्योकि उनके धर्म का संपूर्ण ज्ञान हुए बिना हमारे राजधर्म का हारना तो निश्चित ही है।...
हाँ हाँ क्योंकि यह नियम है कि किसी की भी अच्छाई-बुराई को जाने बिना उसे नष्ट नहीं किया जा सकता है।
इसीलिए पिताजी!... आप हमें नालंदा जाने की आज्ञा दीजिए...
वाह मेरे लालो !... वाह !! जाओं, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है...तुम दोनों अपने कार्य में अवश्य सफल होओगें...
धन्यवाद तात !

बलिदान

बौद्ध धर्म का विशाल विद्यापीठ नालंदा गुरुकुल। जहाँ पर बौद्धधर्म के हजारों विद्यार्थी बौद्धधर्म के सिद्धान्तों की गहन शिक्षा प्राप्त करते थे-

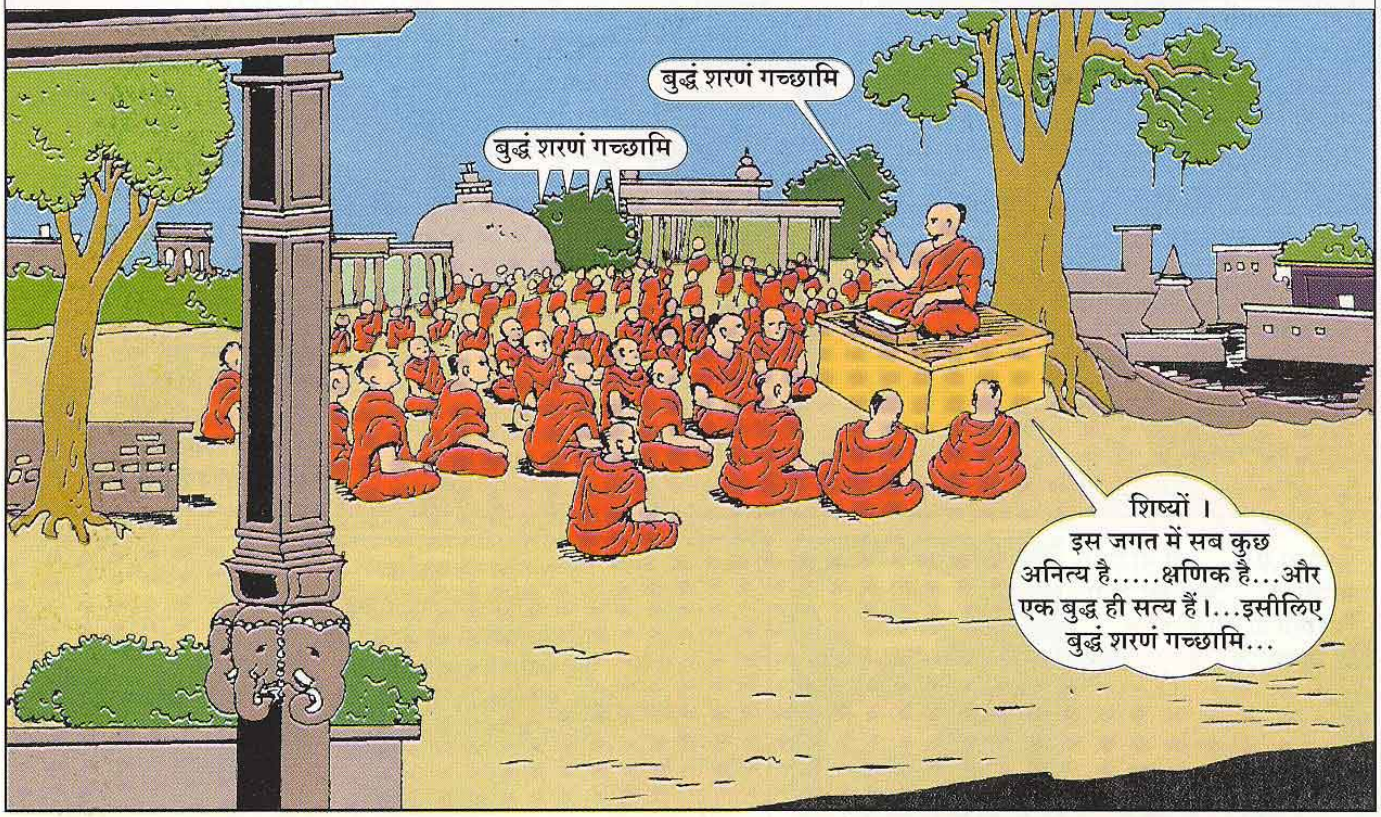

उस विद्यापीठ एवं बौद्ध साधुओं के संघ के प्रमुख आचार्य संघश्री

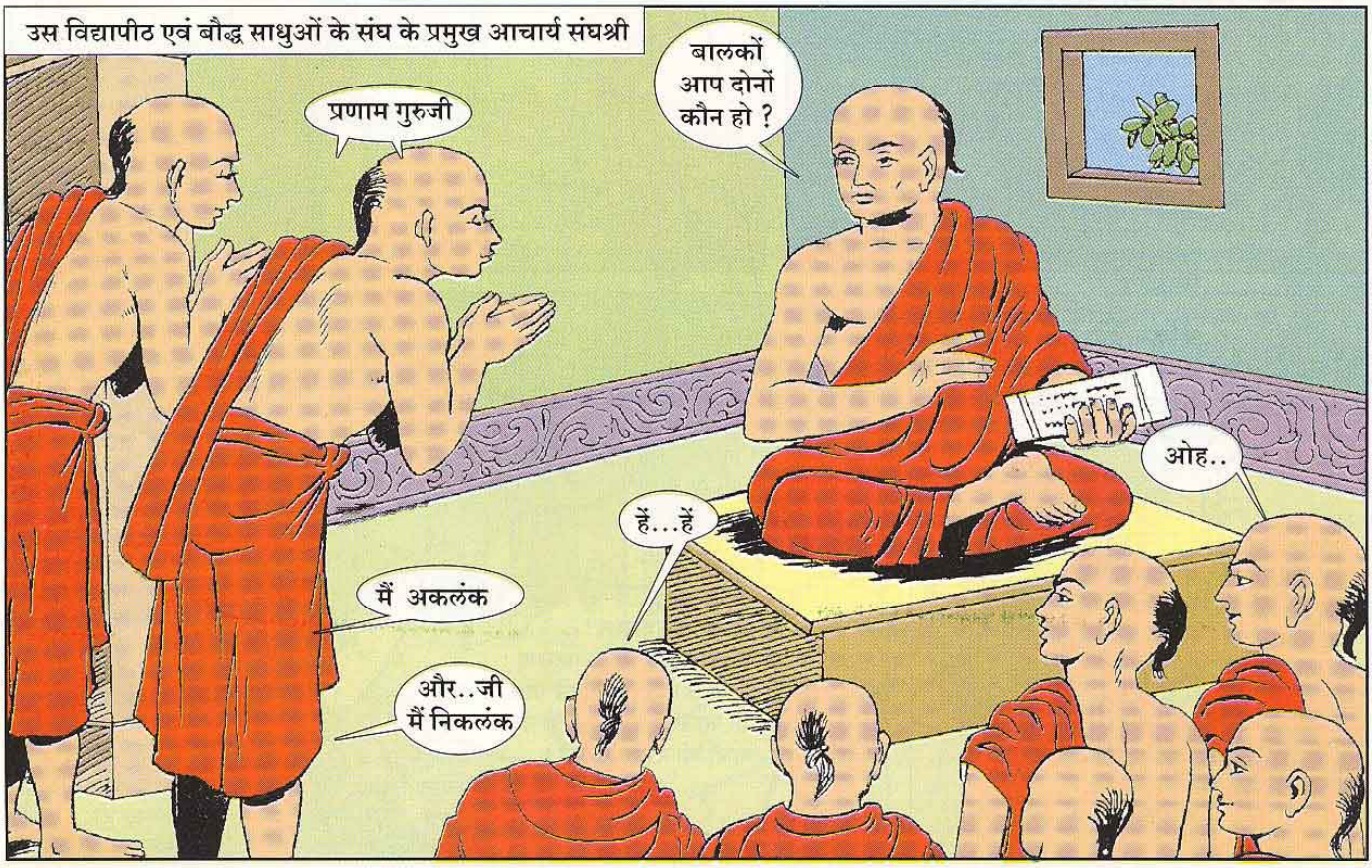

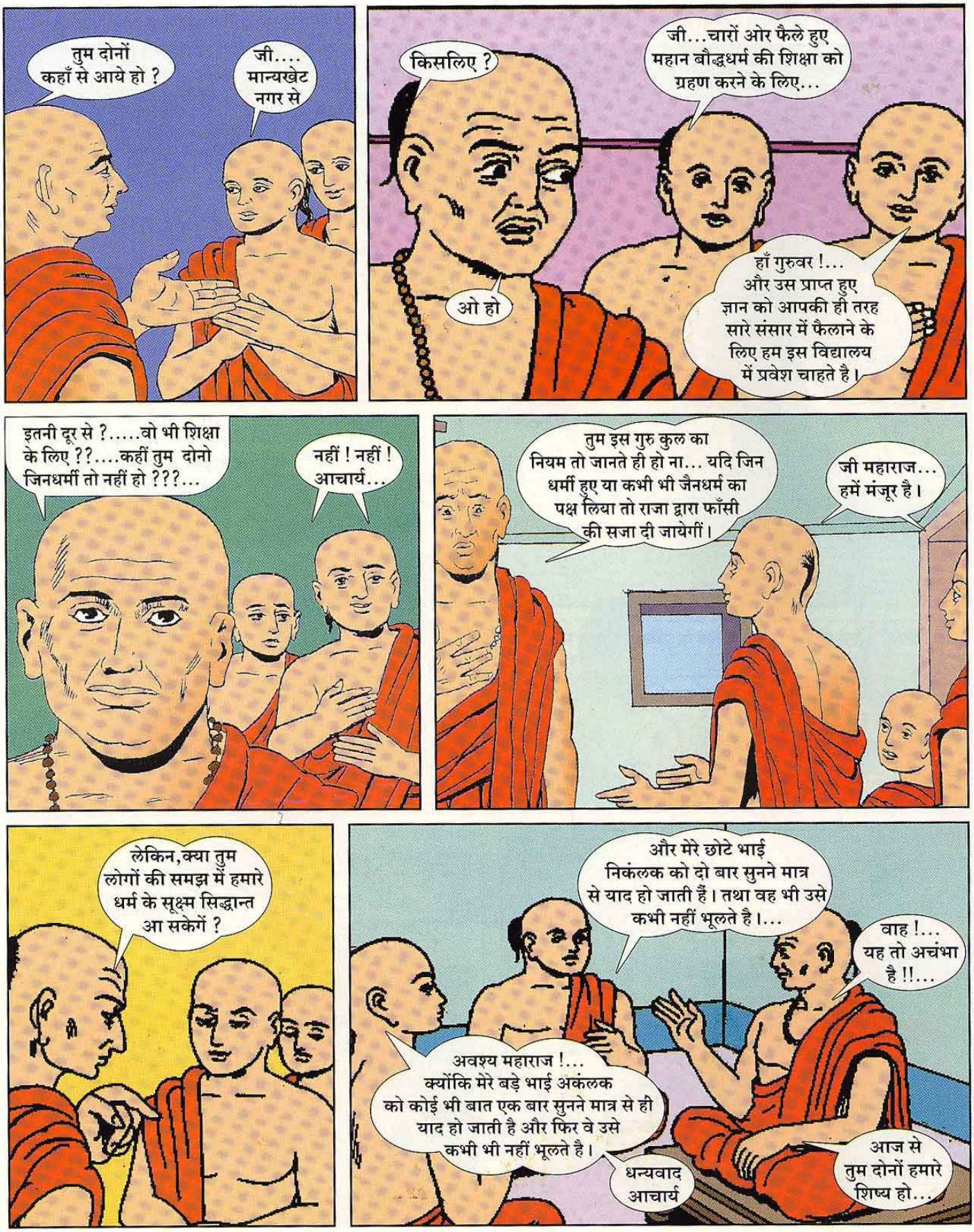
तुम दोनों कहाँ से आये हो ?
जी.... मान्यखेट नगर से
किसलिए ?
जी...चारों ओर फैले हुए महान बौद्धधर्म की शिक्षा को ग्रहण करने के लिए...
ओ हो
हाँ गुरुवर !... और उस प्राप्त हुए ज्ञान को आपकी ही तरह सारे संसार में फैलाने के लिए हम इस विद्यालय में प्रवेश चाहते है।
इतनी दूर से ?.....वो भी शिक्षा के लिए ??....कहीं तुम दोनो जिनधर्मी तो नहीं हो ???...
नहीं ! नहीं ! आचार्य...
तुम इस गुरु कुल का नियम तो जानते ही हो ना... यदि जिन धर्मी हुए या कभी भी जैनधर्म का पक्ष लिया तो राजा द्वारा फाँसी की सजा दी जायेगीं।
जी महाराज... हमें मंजूर है।
लेकिन,क्या तुम लोगों की समझ में हमारे धर्म के सूक्ष्म सिद्धान्त आ सकेगें ?
और मेरे छोटे भाई निकंलक को दो बार सुनने मात्र से याद हो जाती हैं। तथा वह भी उसे कभी नहीं भूलते है।...
वाह !... यह तो अचंभा है !!...
अवश्य महाराज !... क्योंकि मेरे बड़े भाई अकंलक को कोई भी बात एक बार सुनने मात्र से ही याद हो जाती है और फिर वे उसे कभी भी नहीं भूलते है।
धन्यवाद आचार्य
आज से तुम दोनों हमारे शिष्य हो...

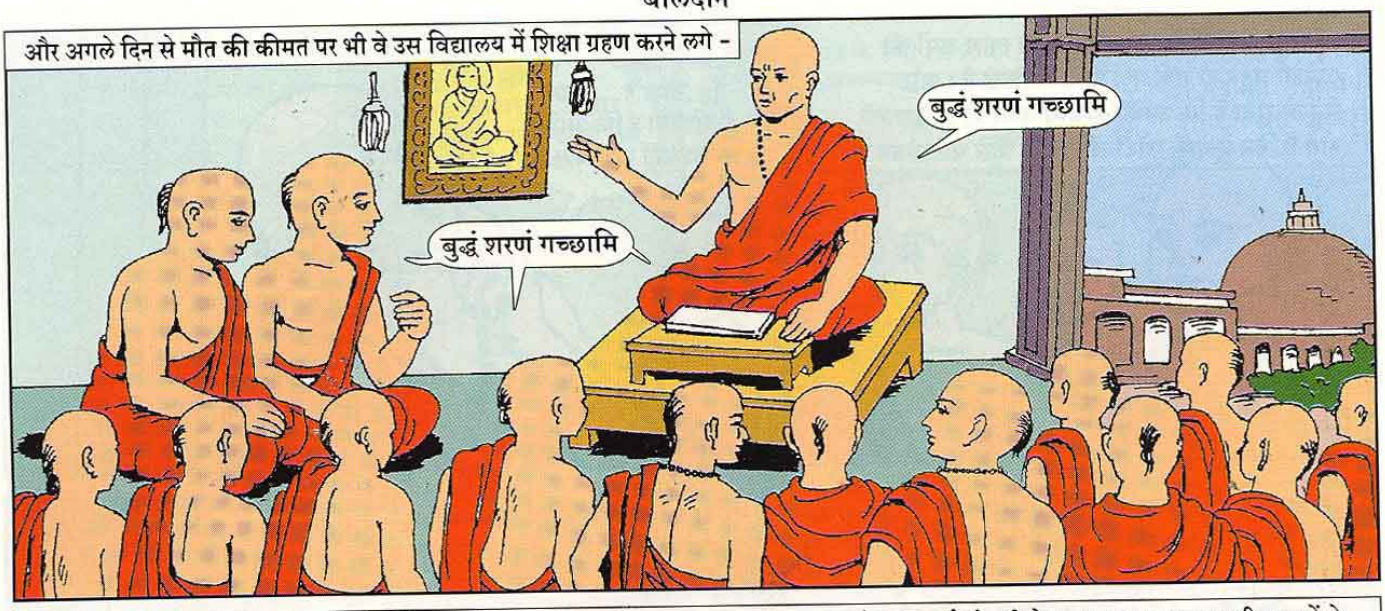
और अगले दिन से मौत की कीमत पर भी वे उस विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने लगे -
बुद्धं शरणं गच्छामि
बुद्धं शरणं गच्छामि

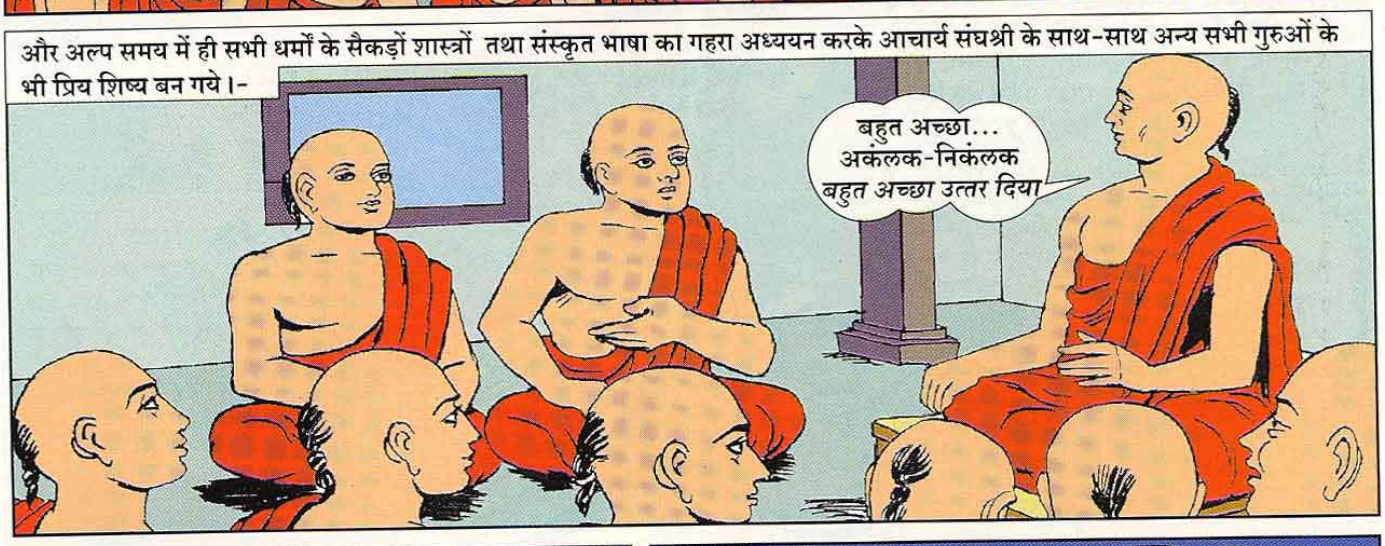
और अल्प समय में ही सभी धर्मों के सैकड़ों शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा का गहरा अध्ययन करके आचार्य संघश्री के साथ-साथ अन्य सभी गुरुओं के भी प्रिय शिष्य बन गये।-
बहुत अच्छा... अकलंक-निकलंक बहुत अच्छा उत्तर दिया

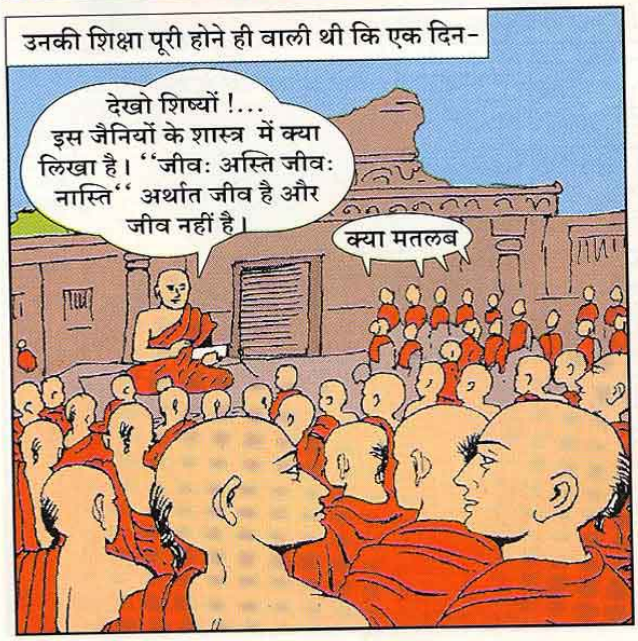
उनकी शिक्षा पूरी होने ही वाली थी कि एक दिन-
देखो शिष्यों !... इस जैनियों के शास्त्र में क्या लिखा है। ''जीवः अस्ति जीवः नास्ति'' अर्थात जीव है और जीव नहीं है।
क्या मतलब

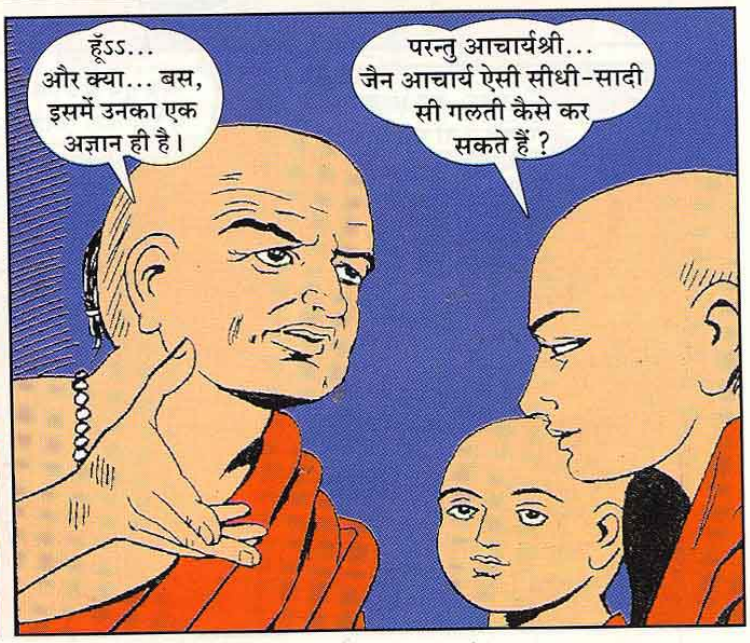
हूँऽऽ... और क्या... बस, इसमें उनका एक अज्ञान ही है।
परन्तु आचार्यश्री... जैन आचार्य ऐसी सीधी-सादी सी गलती कैसे कर सकते हैं ?

हाँ...हाँ... क्योंकि उनके शास्त्र तो अन्य धर्मों की अपेक्षा बहुत ही तर्क पूर्ण शैली में लिखे हैं। और मैनें तो सुना हैं कि उनके आचार्य बहुत ही बुद्धिशाली होते हैं फिर वे ऐसी छोटी सी गलती कैसे कर सकते है ?...
हूँ...ठीक है... ठीक है मैं सोचता हूँ कि आखिर इसका सही अर्थ क्या है ?

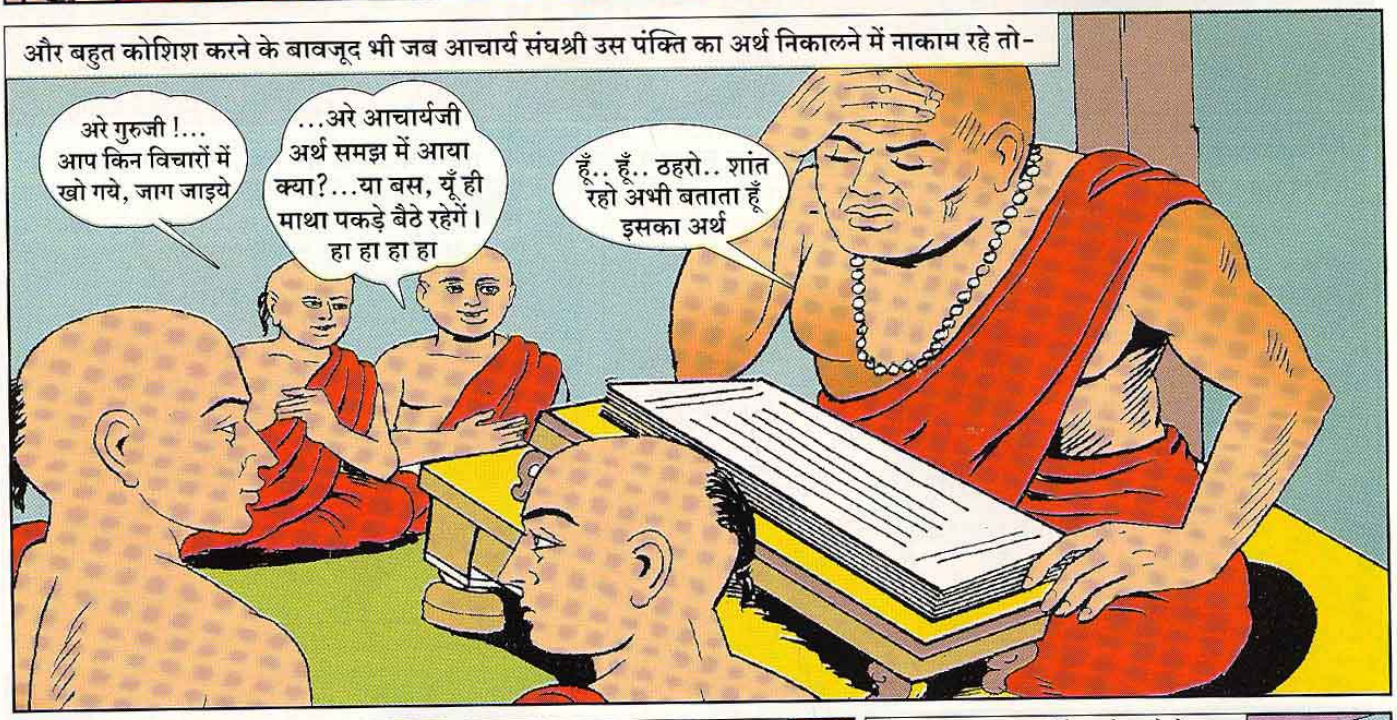
और बहुत कोशिश करने के बावजूद भी जब आचार्य संघश्री उस पंक्ति का अर्थ निकालने में नाकाम रहे तो-
अरे गुरुजी !... आप किन विचारों में खो गये, जाग जाइये
...अरे आचार्यजी अर्थ समझ में आया क्या?...या बस, यूँ ही माथा पकड़े बैठे रहेगें। हा हा हा हा
हूँ.. हूँ.. ठहरो.. शांत रहो अभी बताता हूँ इसका अर्थ

उफ्फ..इस सिद्धान्त पंक्ति ने तो मेरा माथा ही खा लिया.....

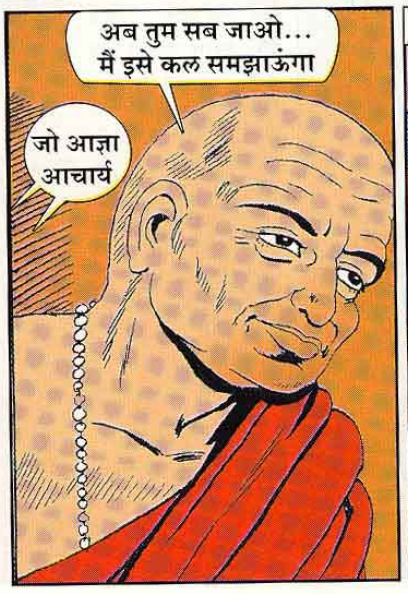
अब तुम सब जाओ... मैं इसे कल समझाऊंगा
जो आज्ञा आचार्य

और पश्चात... सभी के चले जाने के बाद
भाई निकु!...गुरुजी किसलिए भाग गये ? तुम्हें कुछ पता है ?...
हाँ !... हाँ ! उनके सिर मे दर्द था इसीलिए

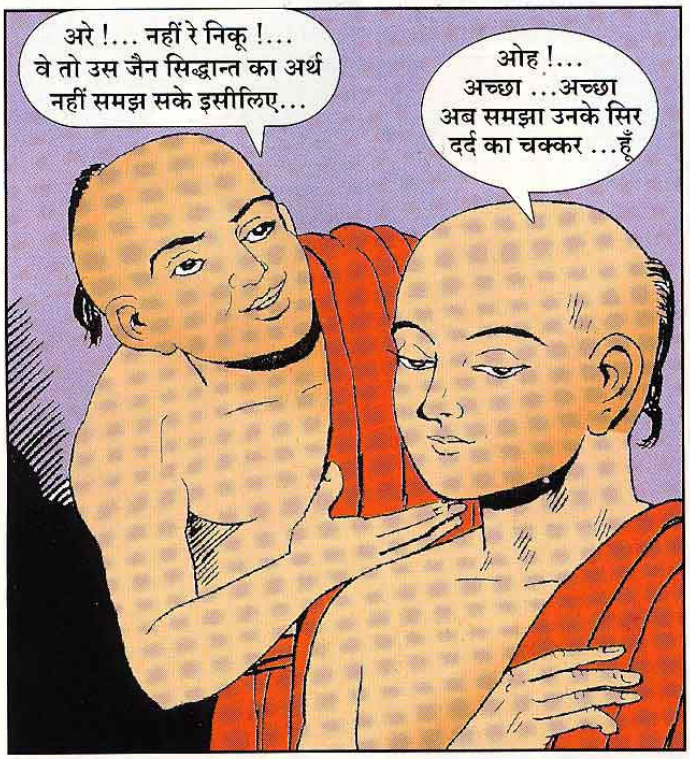
अरे !... नहीं रे निकू !... वे तो उस जैन सिद्धान्त का अर्थ नहीं समझ सके इसीलिए...
ओह !... अच्छा ...अच्छा अब समझा उनके सिर दर्द का चक्कर ...हूँ

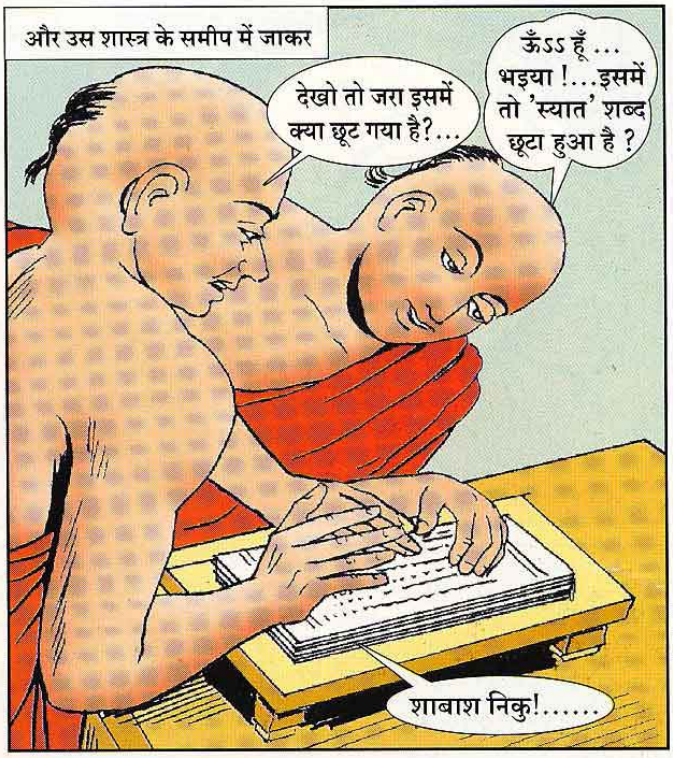
और उस शास्त्र के समीप में जाकर
देखो तो जरा इसमें क्या छूट गया है?...
ऊँऽऽ हूँ ... भइया !...इसमें तो 'स्यात' शब्द छूटा हुआ है ?
शाबाश निकु!.....

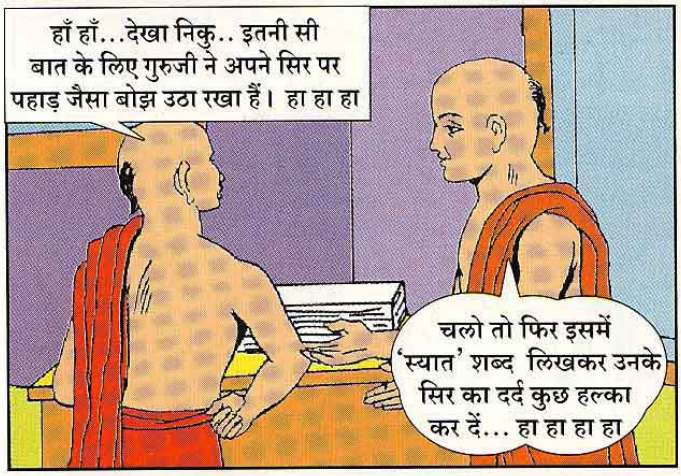
हाँ हाँ...देखा निकु.. इतनी सी बात के लिए गुरुजी ने अपने सिर पर पहाड़ जैसा बोझ उठा रखा हैं। हा हा हा
चलो तो फिर इसमें 'स्यात' शब्द लिखकर उनके सिर का दर्द कुछ हल्का कर दें... हा हा हा हा

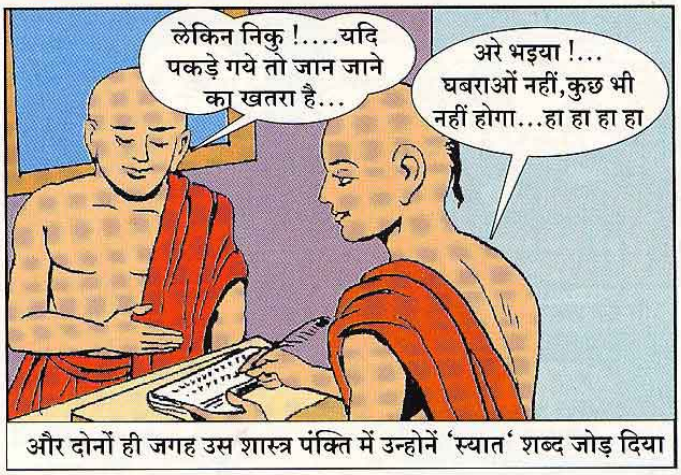
लेकिन निकु !.....यदि पकड़े गये तो जान जाने का खतरा है...
अरे भइया !... घबराओं नहीं,कुछ भी नहीं होगा...हा हा हा हा
और दोनों ही जगह उस शास्त्र पंक्ति में उन्होनें 'स्यात' शब्द जोड़ दिया

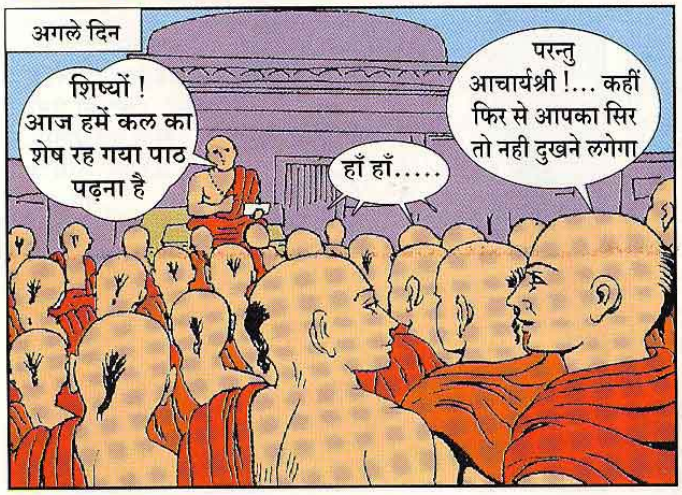
अगले दिन
शिष्यों ! आज हमें कल का शेष रह गया पाठ पढ़ना है
हाँ हाँ.....
परन्तु आचार्यश्री !... कहीं फिर से आपका सिर तो नही दुखने लगेगा

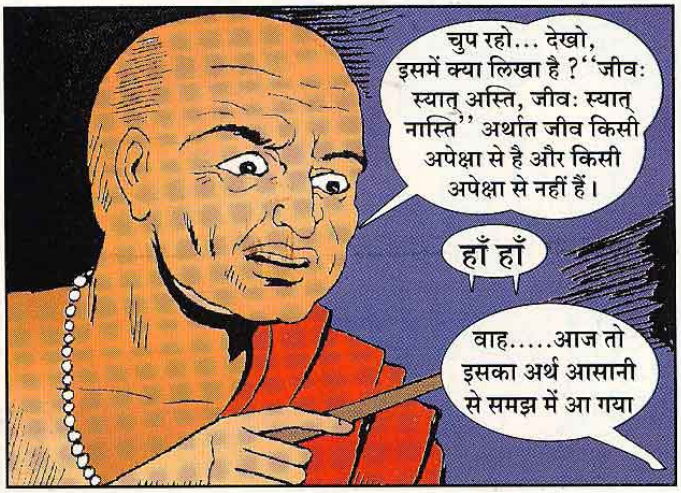
चुप रहो... देखो, इसमें क्या लिखा है ?''जीवः स्यात् अस्ति, जीवः स्यात् नास्ति'' अर्थात जीव किसी अपेक्षा से है और किसी अपेक्षा से नहीं हैं।
हाँ हाँ
वाह.....आज तो इसका अर्थ आसानी से समझ में आ गया

ठीक है
लेकिन इसमें 'स्यात' शब्द किसने लिख दिया है? क्योंकि कल तो इसमें नहीं लिखा था, हो ना हो विद्यालय में कोई जैनी अवश्य ही घुस आया है।
और आचार्य संघ श्री का क्रोध सातवें आसमान को छूने लगा
इसमे 'स्यात' शब्द किसने लिखा है ?... हेंऽऽ...बोलो...बोलो
म म् मैने नहीं लिखा
मम मा ऽऽलूम..नहीं
ओह !..तो यह ऐसे नहीं बतायेगे ?
न्..न्... नही गुरुजी
बोलों तुमने लिखा है।
अकलंक तुमने
नहीं आचार्य
नहीं
निकलंक तुमने
नहीं
नहीं महाराज
और एक एक कर के सभी के इनकार कर देने पर
द्वारपाल
ऐ द्वारपाल
ज ज... जीऽऽ जीऽ आचार्य
जाओ... शीघ्र ही मंत्री को यहाँ पर आने के लिए कहो और साथ में जैनियों की एक प्रतिमा भी लेते आना।
अब देखता हूँ मैं भी कि वह कैसे बचता है मुझसे?...जो भी जैनी होगा वह प्रतिमा को नहीं लांघेगा और....

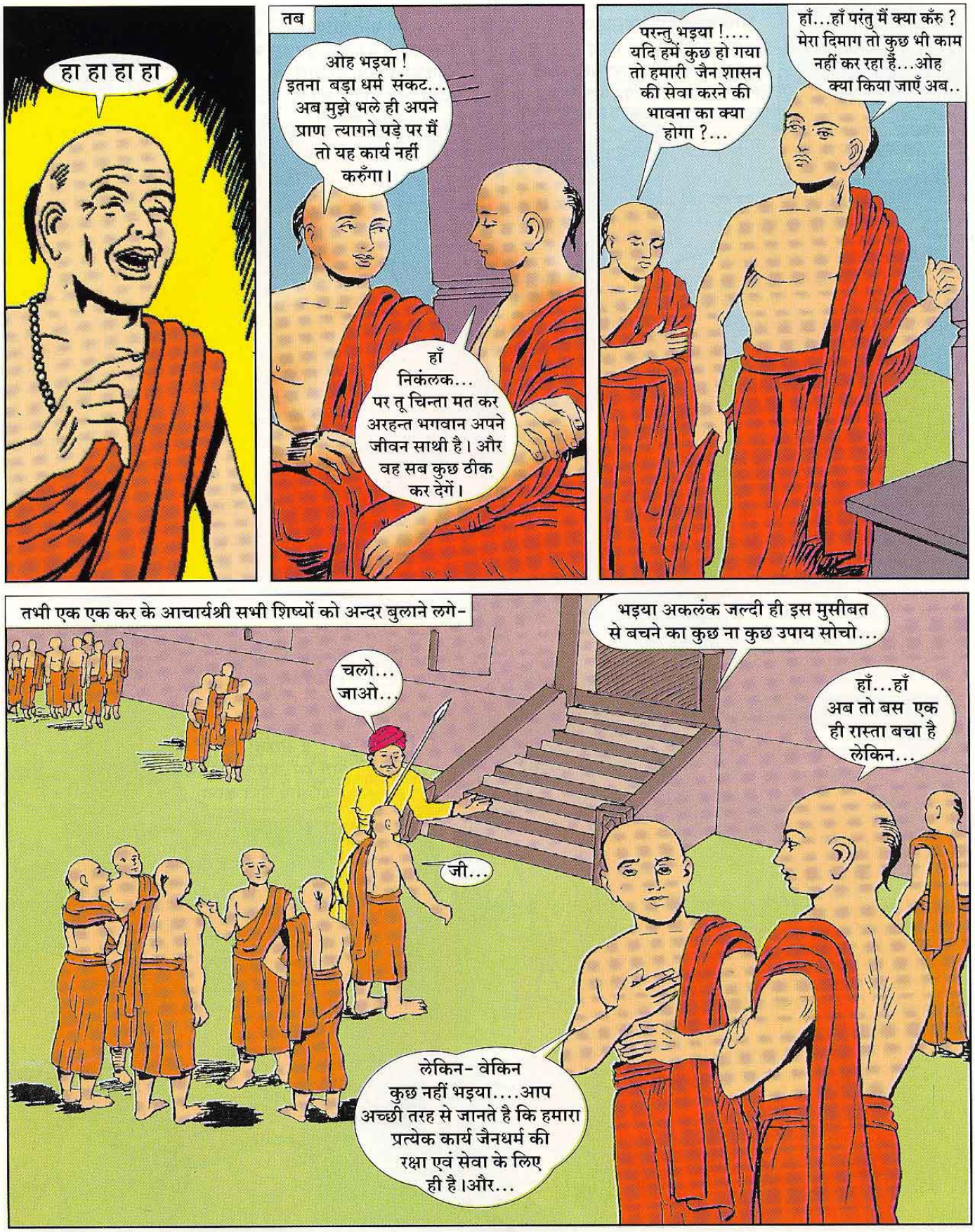
हा हा हा हा
तब
ओह भइया ! इतना बड़ा धर्म संकट... अब मुझे भले ही अपने प्राण त्यागने पड़े पर मैं तो यह कार्य नहीं करुँगा।
हाँ निकंलक... पर तू चिन्ता मत कर अरहन्त भगवान अपने जीवन साथी है। और वह सब कुछ ठीक कर देगें।
परन्तु भइया !.... यदि हमें कुछ हो गया तो हमारी जैन शासन की सेवा करने की भावना का क्या होगा ?...
हाँ...हाँ परंतु मैं क्या करुँ ? मेरा दिमाग तो कुछ भी काम नहीं कर रहा है...ओह क्या किया जाएँ अब..
तभी एक एक कर के आचार्यश्री सभी शिष्यों को अन्दर बुलाने लगे-
चलो... जाओ...
भइया अकलंक जल्दी ही इस मुसीबत से बचने का कुछ ना कुछ उपाय सोचो...
हाँ...हाँ अब तो बस एक ही रास्ता बचा है लेकिन...
जी...
लेकिन- वेकिन कुछ नहीं भइया....आप अच्छी तरह से जानते है कि हमारा प्रत्येक कार्य जैनधर्म की रक्षा एवं सेवा के लिए ही है।और...

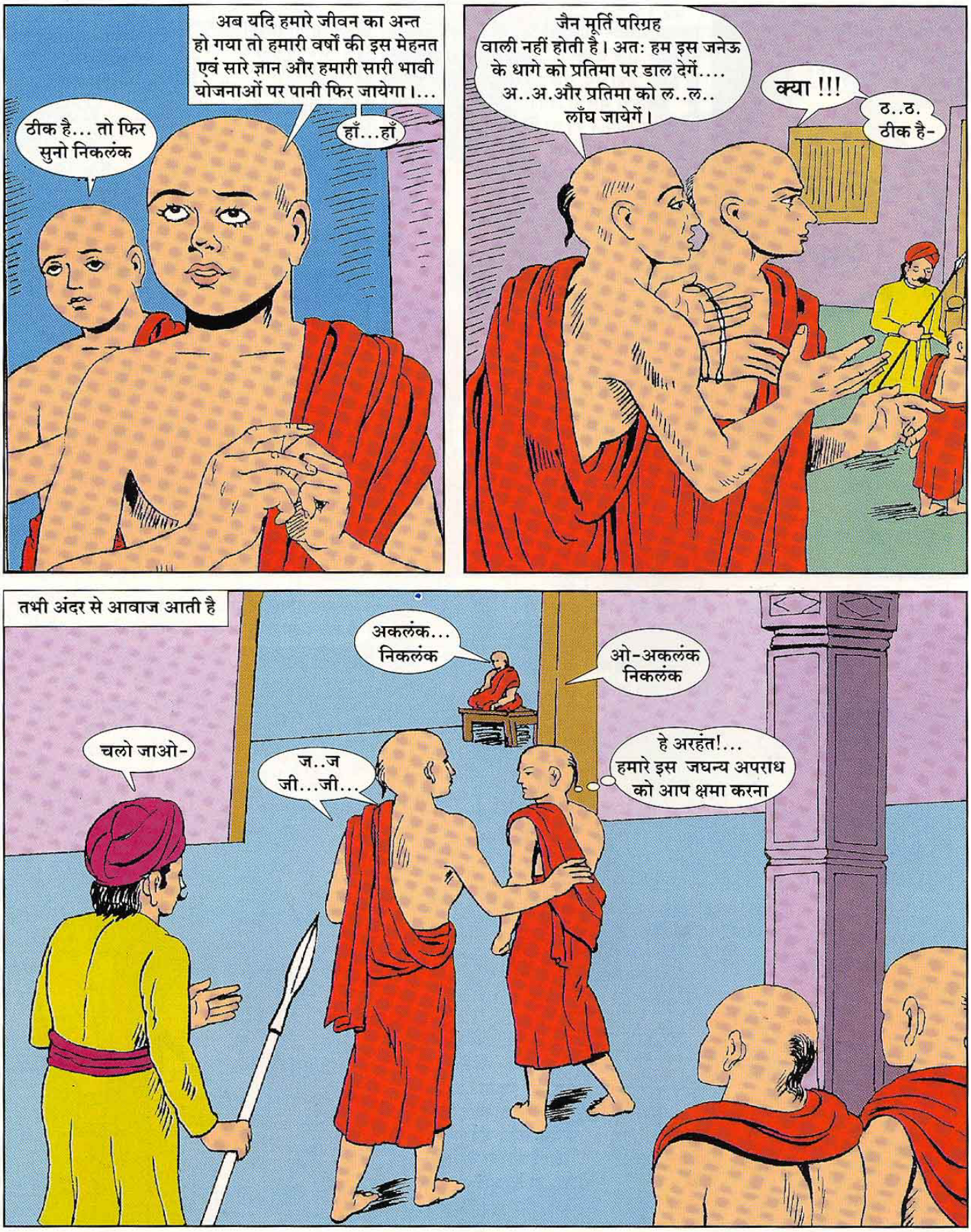
अब यदि हमारे जीवन का अन्त हो गया तो हमारी वर्षों की इस मेहनत एवं सारे ज्ञान और हमारी सारी भावी योजनाओं पर पानी फिर जायेगा।...
ठीक है... तो फिर सुनो निकलंक
हाँ...हाँ
जैन मूर्ति परिग्रह वाली नहीं होती है। अतः हम इस जनेऊ के धागे को प्रतिमा पर डाल देगें.... अ..अ.और प्रतिमा को ल..ल.. लाँघ जायेगें।
क्या !!!
ठ..ठ. ठीक है-
तभी अंदर से आवाज आती है
अकलंक... निकलंक
ओ-अकलंक निकलंक
चलो जाओ-
ज..ज जी...जी...
हे अरहंत!... हमारे इस जघन्य अपराध को आप क्षमा करना

और अकलंक-निकलंक प्रतिमाजी पर धागा डालकर उसे लाँघ गए ।इस तरह अन्य सभी शिष्यों के भी प्रतिमा को लाँघ जाने के बाद

हे महाराज ! लगता है इनमें से कोई भी जैन नहीं है।

नहीं मंत्रीजी नहीं !... है अवश्य है और जो भी है उसका पकड़ा जाना बहुत ही जरुरी हैं अन्यथा.....

अन्यथा क्या होगा आचार्य वर!... ...पर अब हम कर भी क्या सकते है ?...

अरे मंत्रीजी !... हमने इतनी कड़ी मेहनत करने के बाद में जैन धर्म को दबाकर जो बौद्ध धर्म का महल तैयार किया है। वह पुनः ढ़ह जायेगा...समझे

मंत्रीजी सुनो...मेरे पास में अभी भी एक युक्ति शेष है।

हें हें ... वह क्या ???

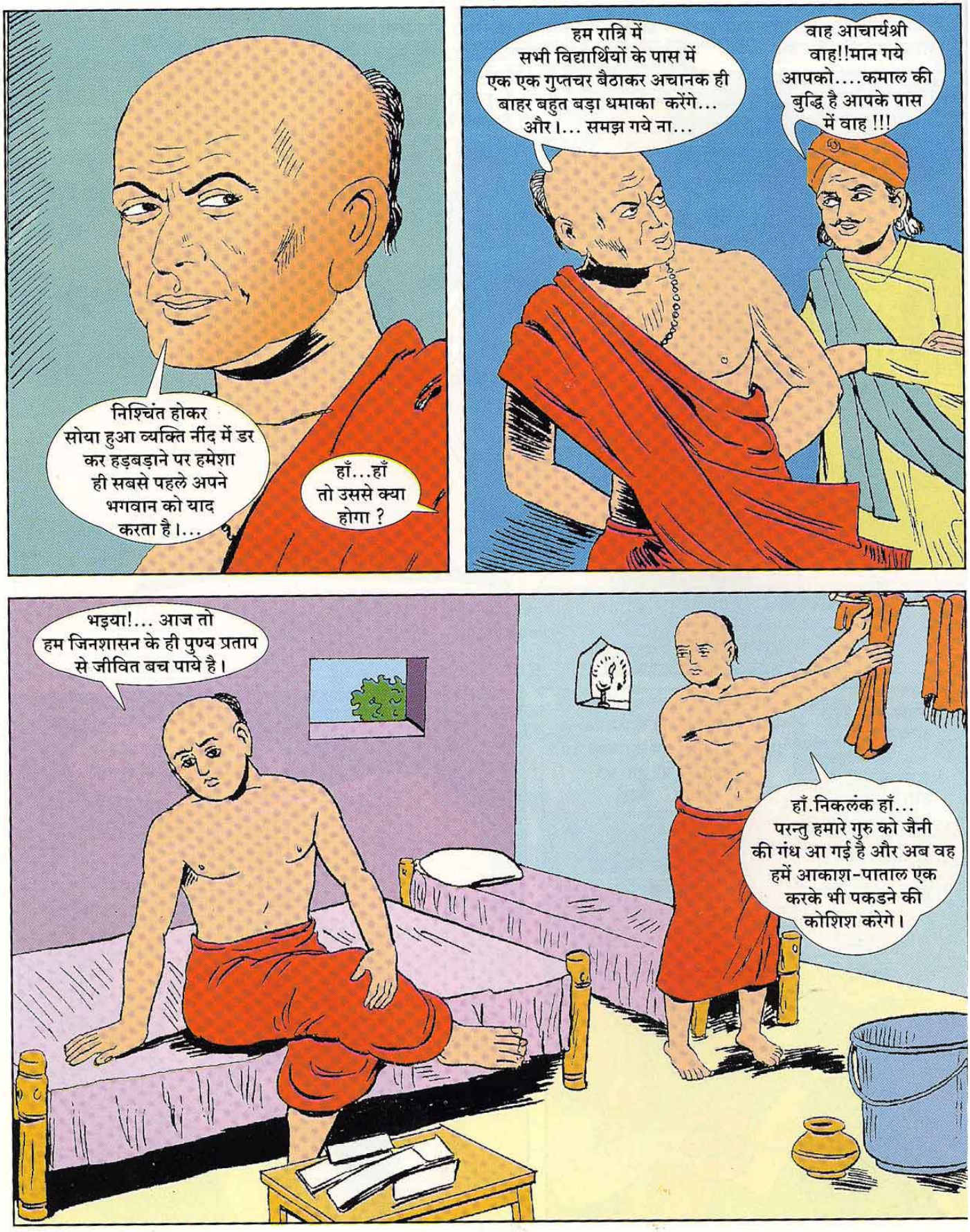
निश्चिंत होकर सोया हुआ व्यक्ति नींद में डर कर हड़बड़ाने पर हमेशा ही सबसे पहले अपने भगवान को याद करता है।...
हाँ...हाँ तो उससे क्या होगा ?
हम रात्रि में सभी विद्यार्थियों के पास में एक एक गुप्तचर बैठाकर अचानक ही बाहर बहुत बड़ा धमाका करेंगे... और।... समझ गये ना...
वाह आचार्यश्री वाह!!मान गये आपको....कमाल की बुद्धि है आपके पास में वाह !!!
भइया!... आज तो हम जिनशासन के ही पुण्य प्रताप से जीवित बच पाये है।
हाँ.निकलंक हाँ... परन्तु हमारे गुरु को जैनी की गंध आ गई है और अब वह हमें आकाश-पाताल एक करके भी पकडने की कोशिश करेगे।

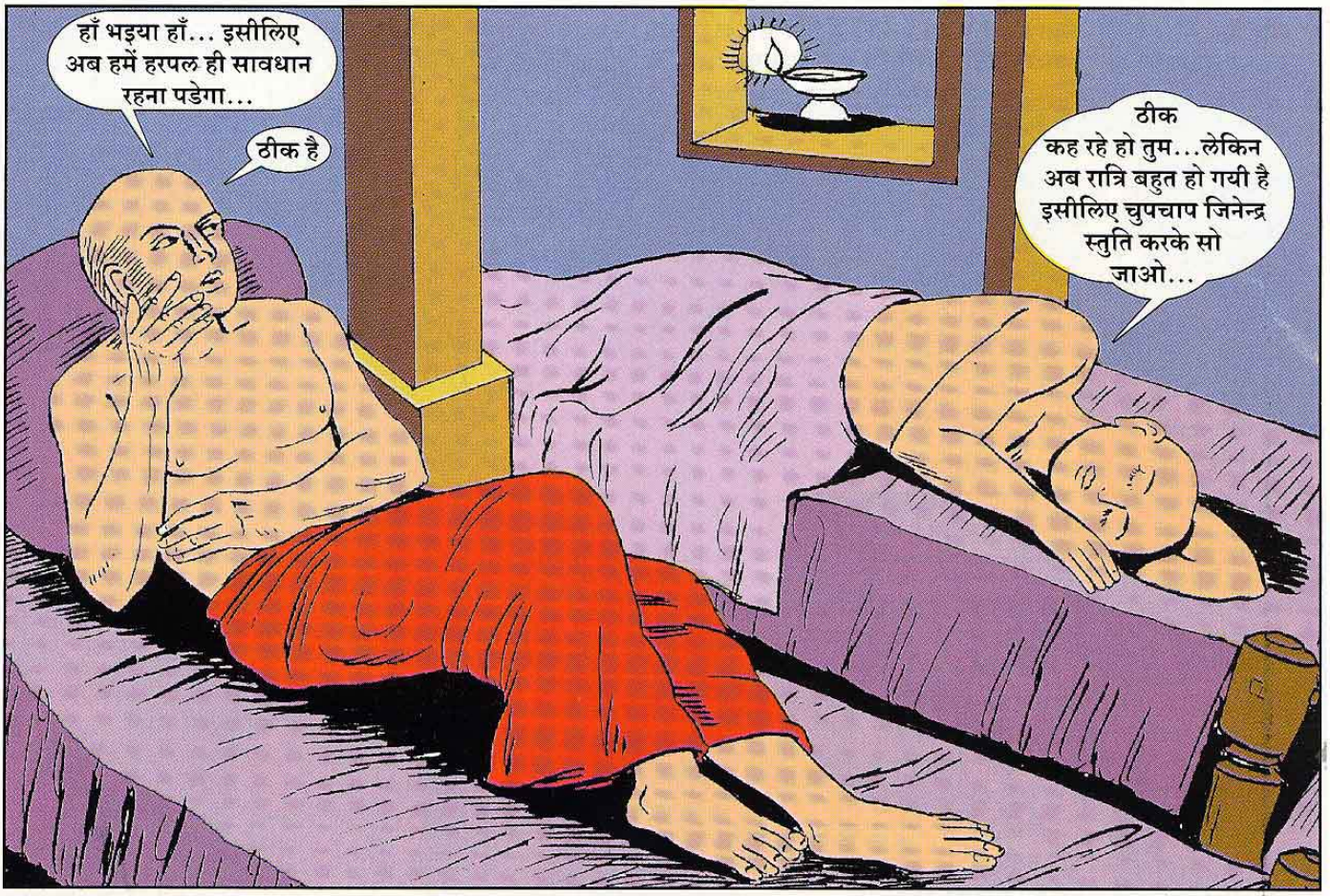
हाँ भइया हाँ... इसीलिए अब हमें हरपल ही सावधान रहना पडेगा...
ठीक है
ठीक कह रहे हो तुम...लेकिन अब रात्रि बहुत हो गयी है इसीलिए चुपचाप जिनेन्द्र स्तुति करके सो जाओ...

कुछ समय बाद मध्य रात्रि में अचानक ही
धड़ाम धड़ाम

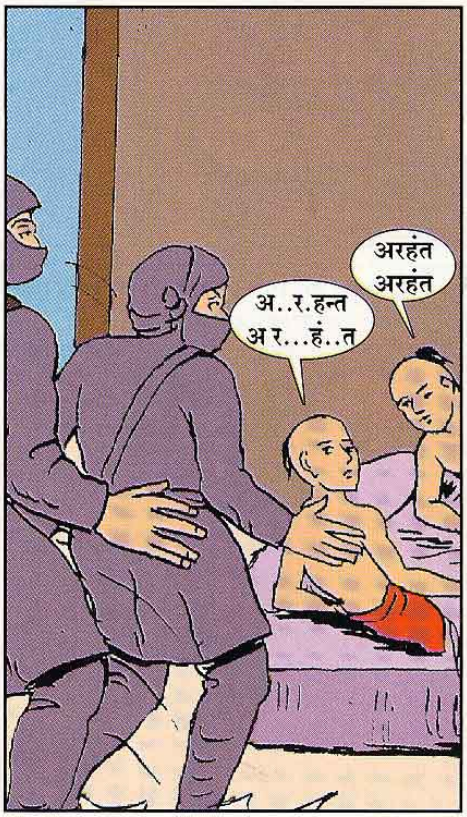
अरहंत अरहंत
अ..र.हन्त अ र...हं..त

और तभी छुपे हुए वें गुप्तचर अंदर आ गए
अरे दुष्टों !....तो तुम दोनो ही जैनी हो
चलो... आचार्यश्री के पास में चलो...

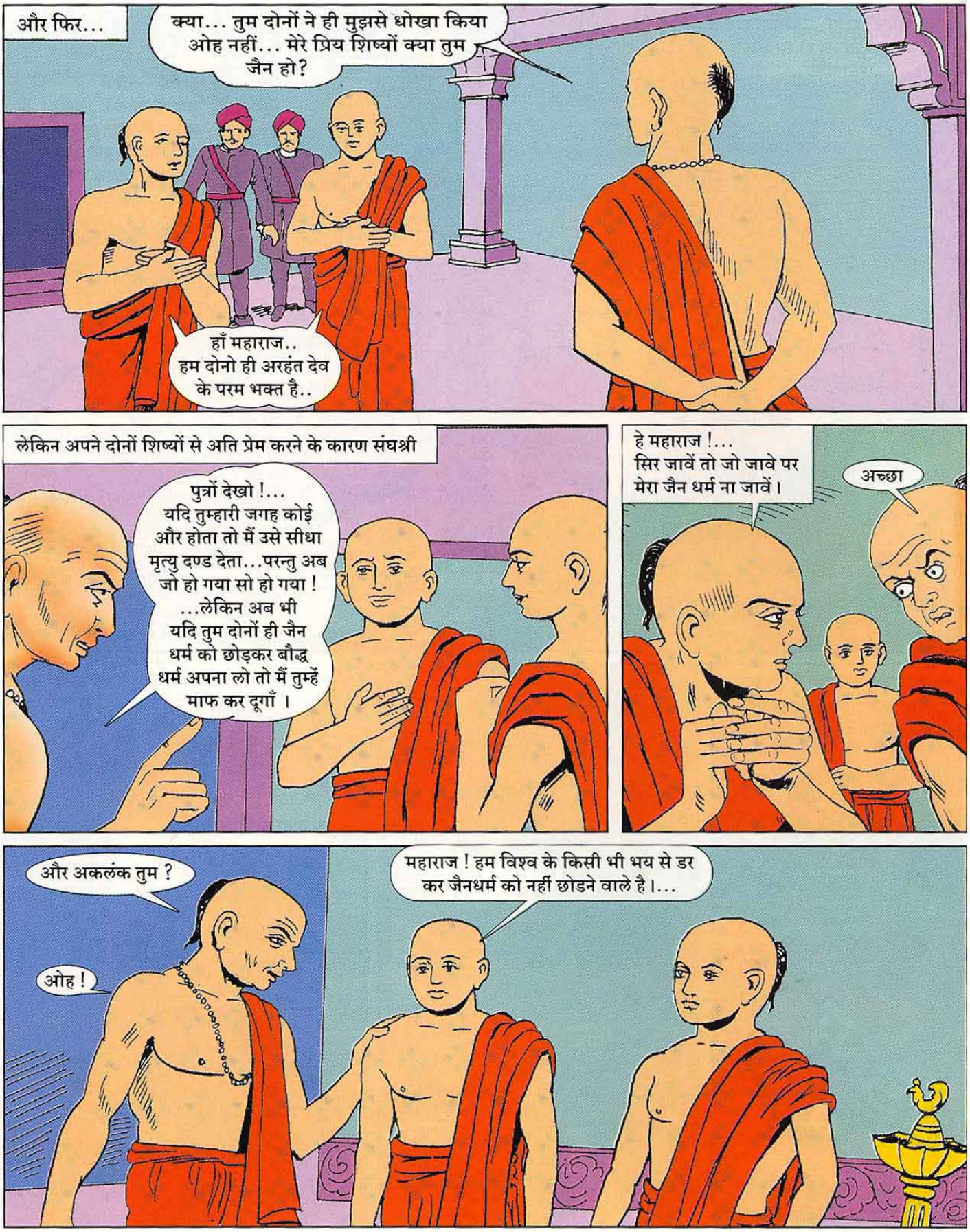
और फिर...
क्या... तुम दोनों ने ही मुझसे धोखा किया ओह नहीं... मेरे प्रिय शिष्यों क्या तुम जैन हो?
हाँ महाराज.. हम दोनो ही अरहंत देव के परम भक्त है..
लेकिन अपने दोनों शिष्यों से अति प्रेम करने के कारण संघश्री
पुत्रों देखो !... यदि तुम्हारी जगह कोई और होता तो मैं उसे सीधा मृत्यु दण्ड देता...परन्तु अब जो हो गया सो हो गया ! ...लेकिन अब भी यदि तुम दोनों ही जैन धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लो तो मैं तुम्हें माफ कर दूगाँ ।
हे महाराज !... सिर जावें तो जो जावे पर मेरा जैन धर्म ना जावें।
अच्छा
और अकलंक तुम ?
ओह !
महाराज ! हम विश्व के किसी भी भय से डर कर जैनधर्म को नहीं छोडने वाले है।...

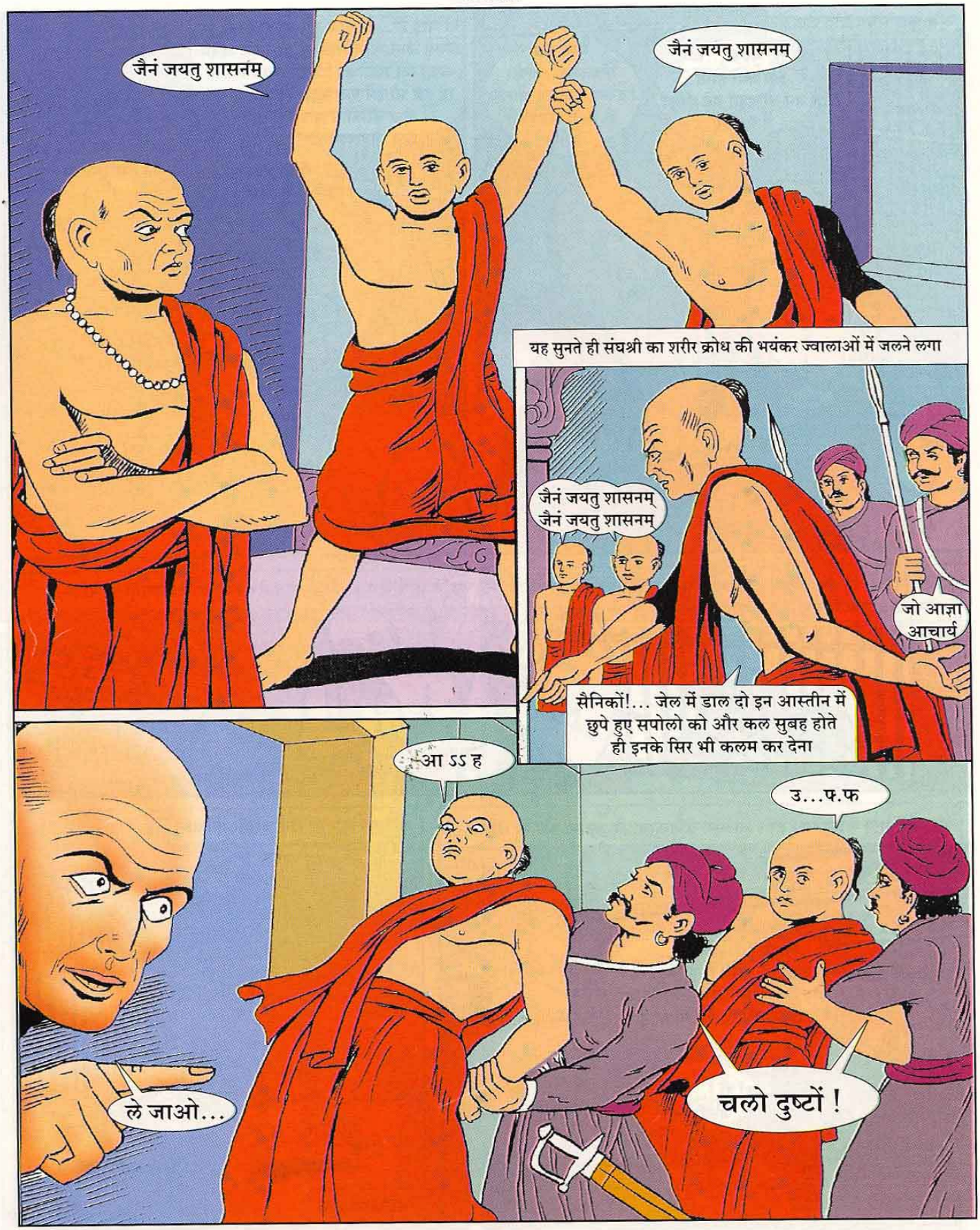
जैनं जयतु शासनम्
जैनं जयतु शासनम्
यह सुनते ही संघश्री का शरीर क्रोध की भयंकर ज्वालाओं में जलने लगा
जैनं जयतु शासनम्
जैनं जयतु शासनम्
जो आज्ञा आचार्य
सैनिकों!... जेल में डाल दो इन आस्तीन में छुपे हुए सपोलो को और कल सुबह होते ही इनके सिर भी कलम कर देना
आ ऽऽ ह
उ...फ.फ
ले जाओ...
चलो दुष्टों !

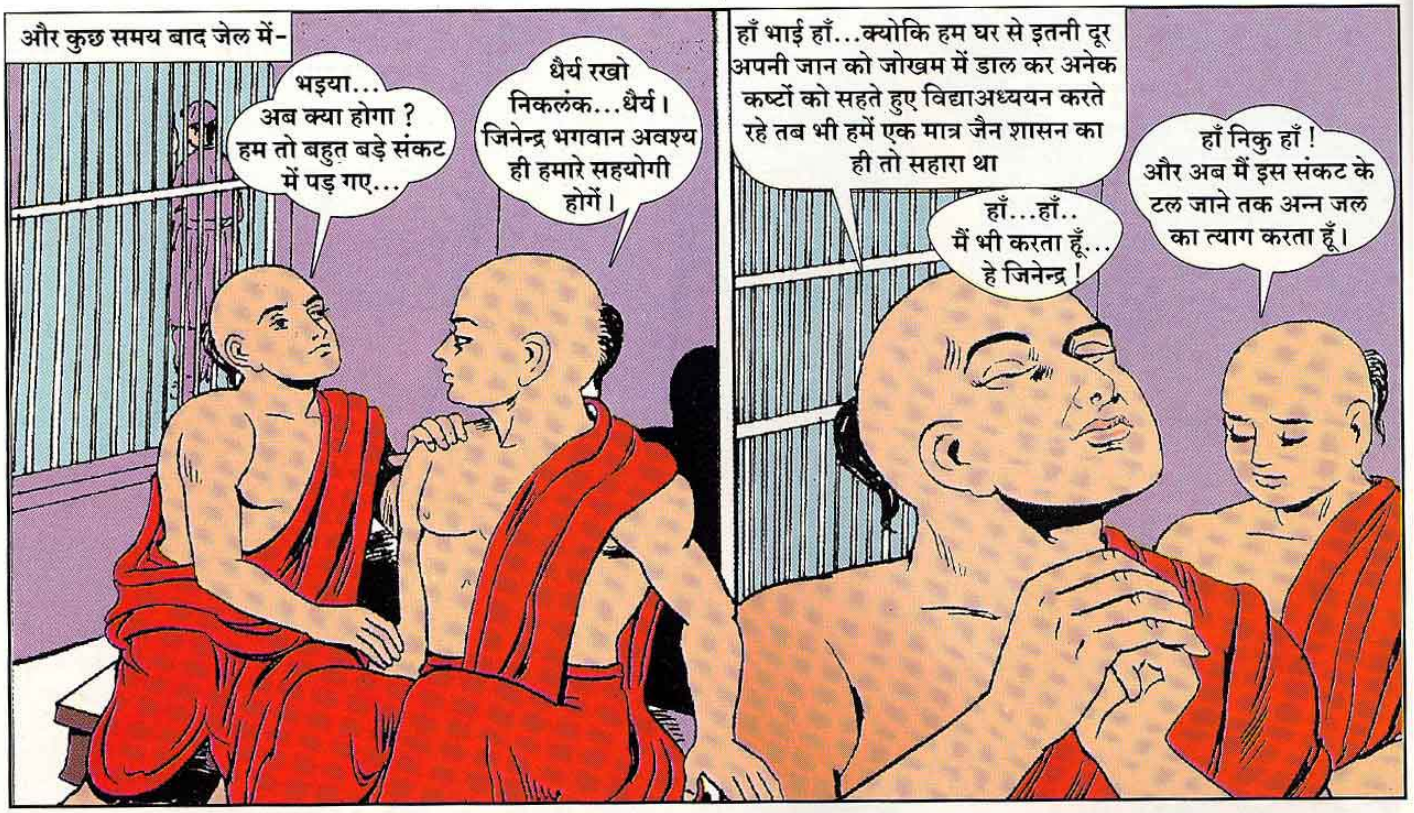
और कुछ समय बाद जेल में-
भइया... अब क्या होगा ? हम तो बहुत बड़े संकट में पड़ गए...
धैर्य रखो निकलंक...धैर्य। जिनेन्द्र भगवान अवश्य ही हमारे सहयोगी होगें।
हाँ भाई हाँ...क्योकि हम घर से इतनी दूर अपनी जान को जोखम में डाल कर अनेक कष्टों को सहते हुए विद्याअध्ययन करते रहे तब भी हमें एक मात्र जैन शासन का ही तो सहारा था
हाँ...हाँ.. मैं भी करता हूँ... हे जिनेन्द्र !
हाँ निकु हाँ ! और अब मैं इस संकट के टल जाने तक अन्न जल का त्याग करता हूँ।

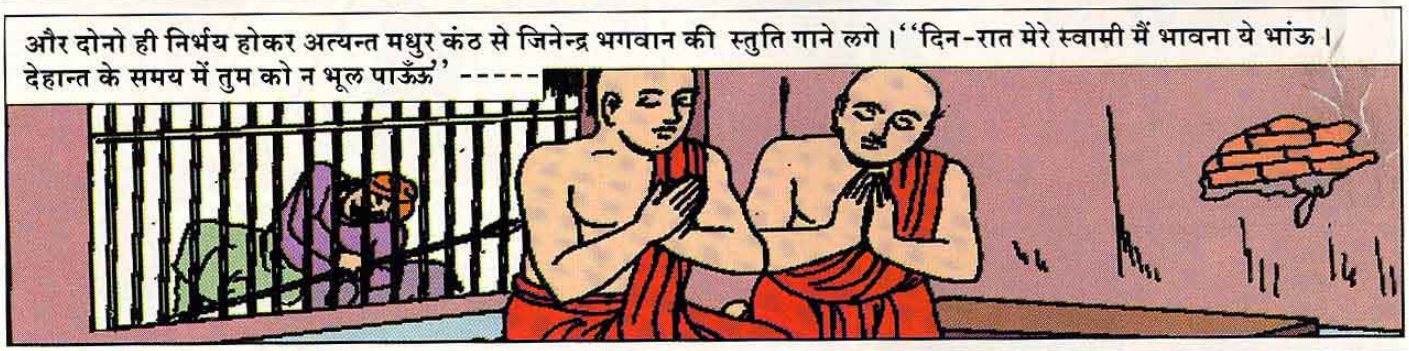
और दोनो ही निर्भय होकर अत्यन्त मधुर कंठ से जिनेन्द्र भगवान की स्तुति गाने लगे।''दिन-रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भांऊ। देहान्त के समय में तुम को न भूल पाऊँऊ'' -----

उनके मधुर गान को सुनकर तथा आलस्य व थकावट के कारण ऊँघ रहे सैनिक-
भइया !...भइया !!... वो देखो !!! सभी सैनिक सो रहे है वाह निकलंक !यहाँ से भागने का यही सबसे अच्छा मौका है
हाँ हाँ !...तो फिर जल्दी करो

और चुपचाप ही दोनों दीवार फांदकर
भाग खडे हुए।

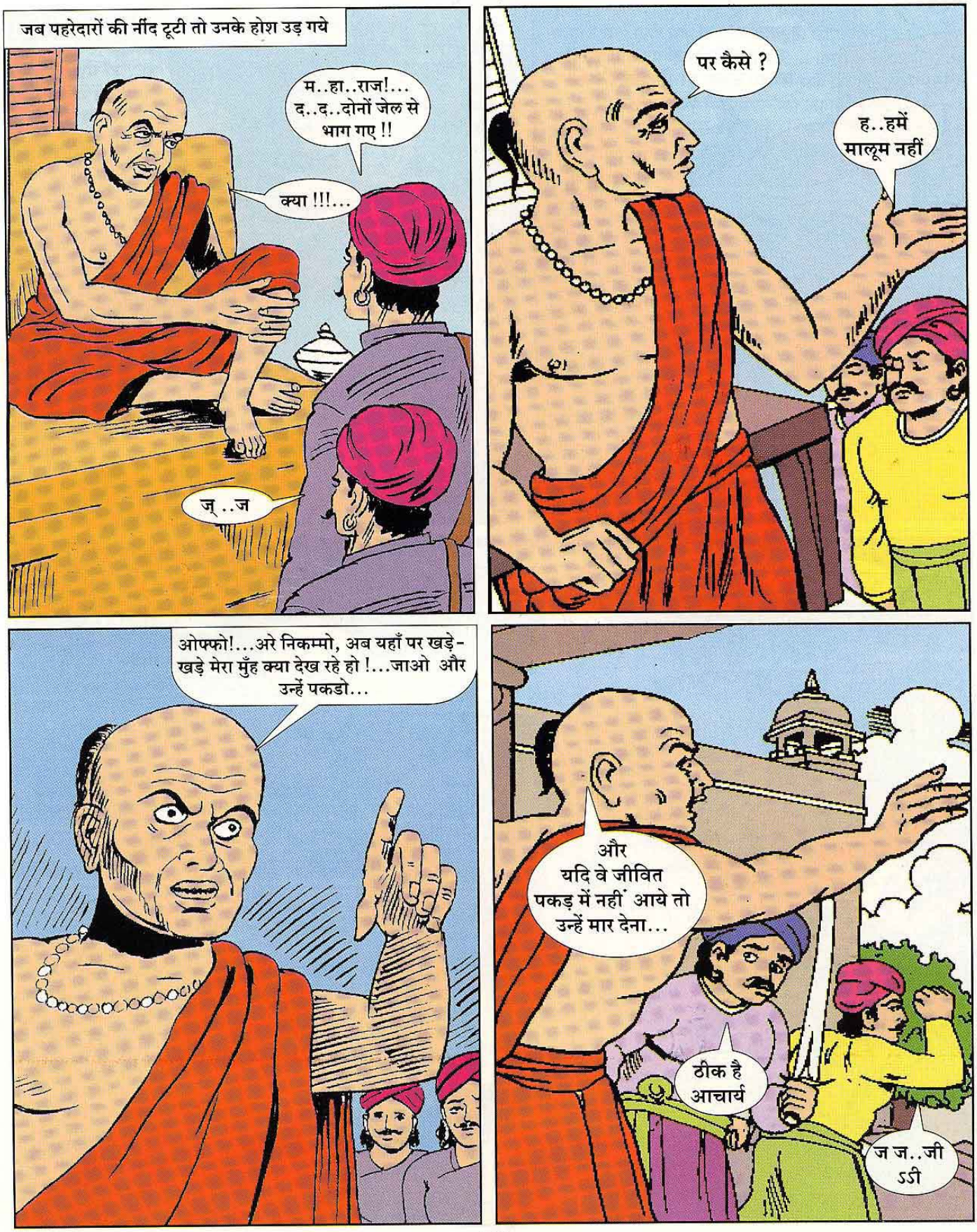
जब पहरेदारों की नींद टूटी तो उनके होश उड़ गये
म..हा..राज!... द..द..दोनों जेल से भाग गए !!
क्या !!!...
ज्..ज
पर कैसे ?
ह..हमें मालूम नहीं
ओफ्फो!...अरे निकम्मो, अब यहाँ पर खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो !...जाओ और उन्हें पकडो...
और यदि वे जीवित पकड़ में नहीं आये तो उन्हें मार देना...
ठीक है आचार्य
ज ज..जी ऽऽी

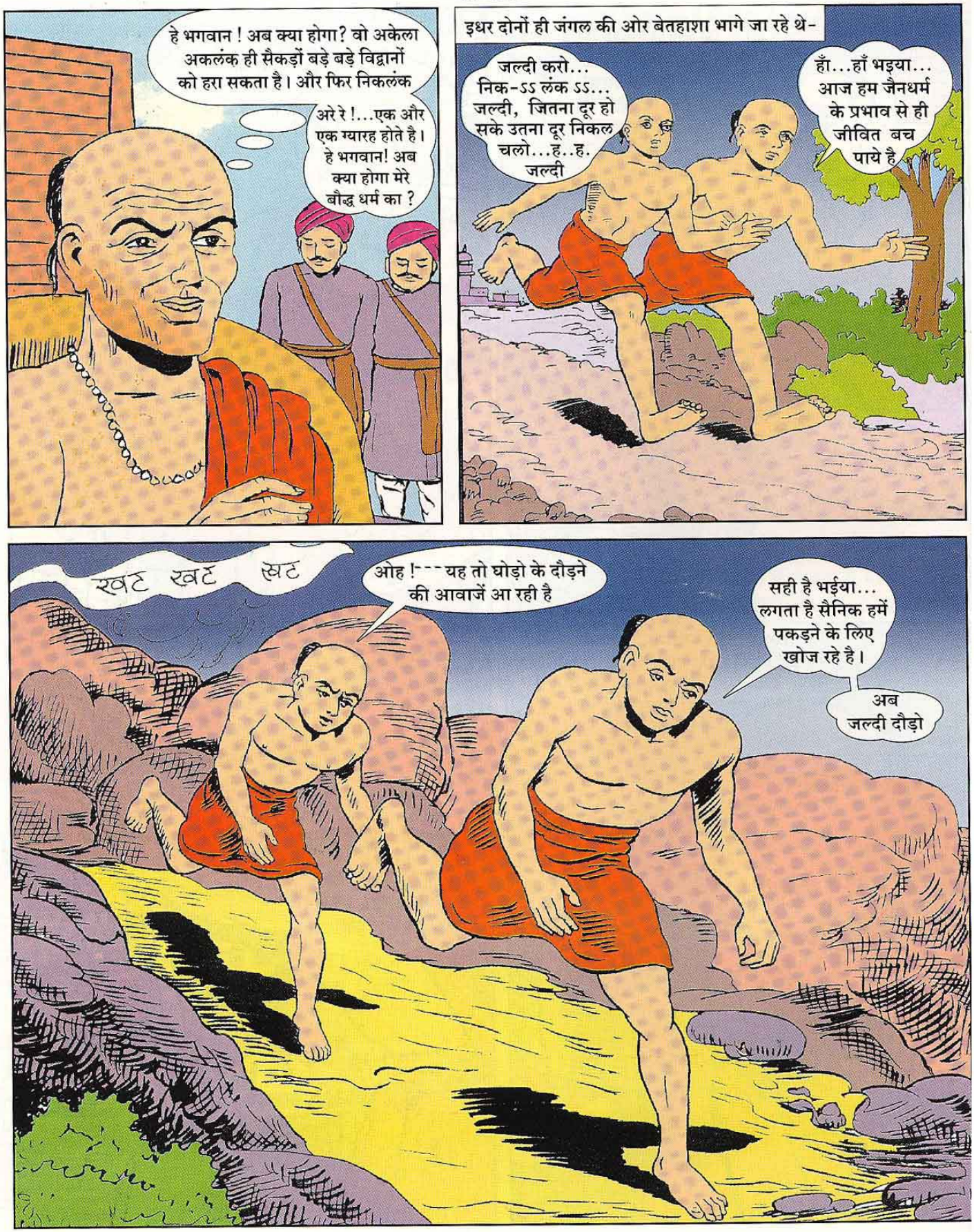
हे भगवान ! अब क्या होगा? वो अकेला अकलंक ही सैकड़ों बड़े बड़े विद्वानों को हरा सकता है। और फिर निकलंक
अरे रे !...एक और एक ग्यारह होते है। हे भगवान! अब क्या होगा मेरे बौद्ध धर्म का ?
इधर दोनों ही जंगल की ओर बेतहाशा भागे जा रहे थे-
जल्दी करो... निक-ऽऽ लंक ऽऽ... जल्दी, जितना दूर हो सके उतना दूर निकल चलो...ह..ह. जल्दी
हाँ...हाँ भइया... आज हम जैनधर्म के प्रभाव से ही जीवित बच पाये है
खट खट खट
ओह !---यह तो घोड़ो के दौड़ने की आवाजें आ रही है
सही है भईया... लगता है सैनिक हमें पकड़ने के लिए खोज रहे है।
अब जल्दी दौड़ो

उफ्फ ! लगता हैं वह हमें पकड़े बिना नही छोड़ेगें... इसीलिए भइया ! आप यहाँ से भाग जाओ...मैं उन्हें रोकता हूँ...।
क्या ! क्या कहाँ तुमने निकु!!... तुझे संकट में डालकर मैं अकेला ही भाग जाऊँ...नहीं कभी नहीं....
ओफ्फो...मेरी बात समझने की कोशिश करो भइया....। मेरी अपेक्षा आप अधिक योग्य है इसीलिए जैनशासन को आपकी ज्यादा जरुरत हैं...
देखो वो रहे... पकड़ो...पकड़ो
नहीं भाई नहीं!...
मैं नहीं जाऊँगा !... तू भाग जा निकु... मैं उन्हें रोकता हूँ।
भइया !... हमारा एक एक क्षण कीमती हैं... जल्दी करो
ओफ्फो...अब में कैसे समझाऊँ आपको...
पकड़ो..... पकड़ो....

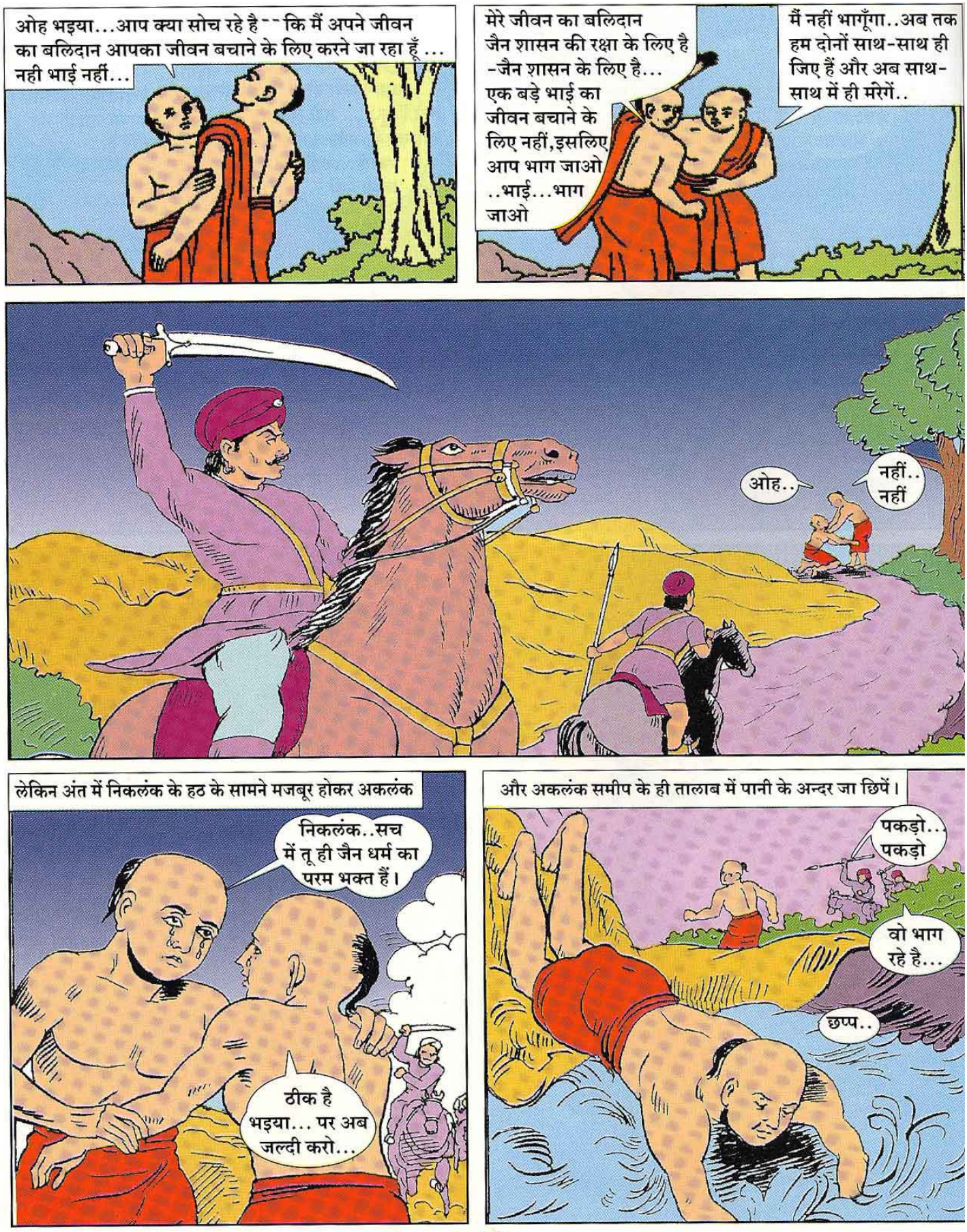
ओह भइया...आप क्या सोच रहे है -- कि मैं अपने जीवन का बलिदान आपका जीवन बचाने के लिए करने जा रहा हूँ ... नही भाई नहीं...
मेरे जीवन का बलिदान जैन शासन की रक्षा के लिए है -जैन शासन के लिए है... एक बड़े भाई का जीवन बचाने के लिए नहीं,इसलिए आप भाग जाओ ..भाई...भाग जाओ
मैं नहीं भागूँगा..अब तक हम दोनों साथ-साथ ही जिए हैं और अब साथ-साथ में ही मरेंगें..
ओह..
नहीं.. नहीं
लेकिन अंत में निकलंक के हठ के सामने मजबूर होकर अकलंक
निकलंक..सच में तू ही जैन धर्म का परम भक्त हैं।
ठीक है भइया... पर अब जल्दी करो...
और अकलंक समीप के ही तालाब में पानी के अन्दर जा छिपें।
पकड़ो.. पकड़ो
वो भाग रहे है...
छप्प..

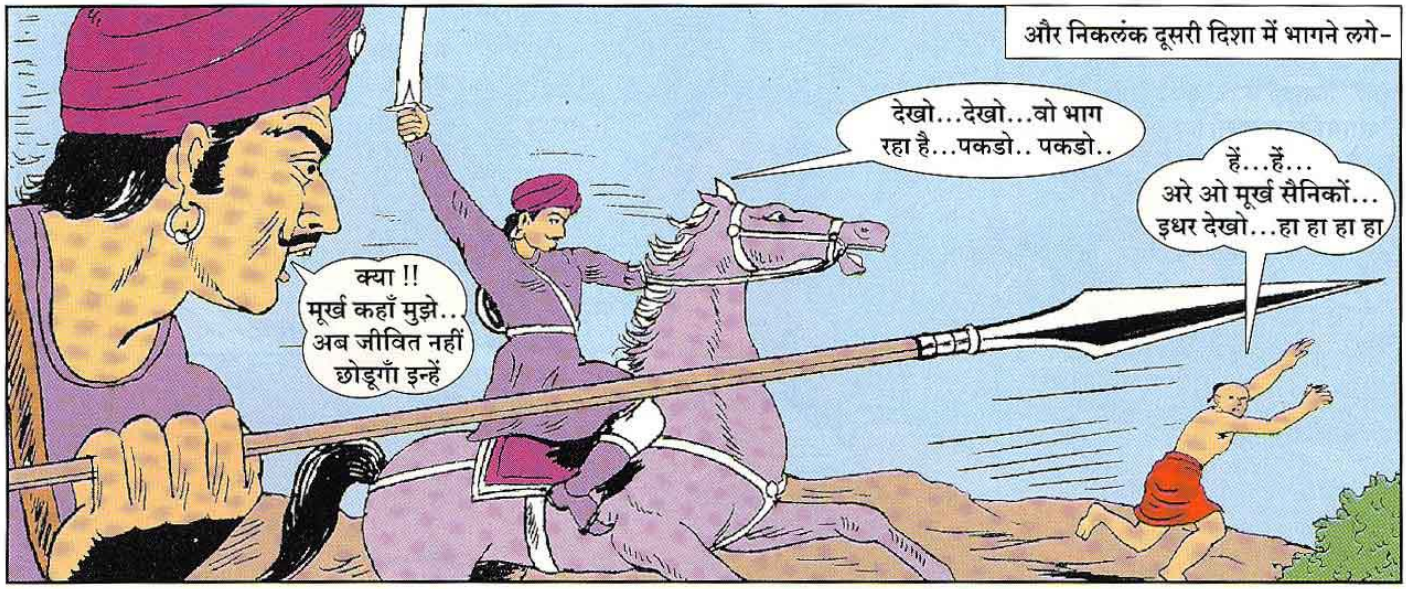
और निकलंक दूसरी दिशा में भागने लगे-
देखो...देखो...वो भाग रहा है...पकडो.. पकडो..
हें...हें... अरे ओ मूर्ख सैनिकों... इधर देखो...हा हा हा हा
क्या !! मूर्ख कहाँ मुझे.. अब जीवित नहीं छोडूगाँ इन्हें

कुछ ही दूरी पर निकलंक को इस तरह से बेहताशा भागते देखकर वहाँ से जा रहा एक धोबी
अरे बाबा !...क्यों भाग रहे हो !!...क्या हुआ !!!
क्या कोई शेर पीछे पड़ा हैं !.... ओह !
ह..ह..ह

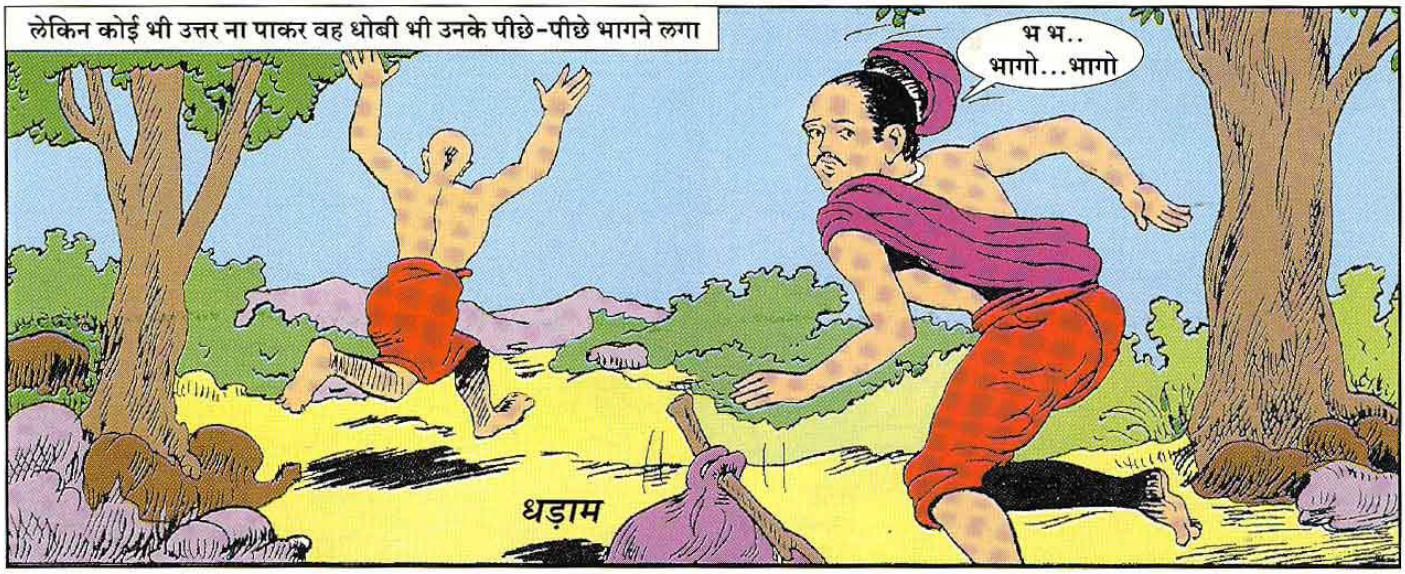
लेकिन कोई भी उत्तर ना पाकर वह धोबी भी उनके पीछे-पीछे भागने लगा
भ भ.. भागो...भागो
धड़ाम

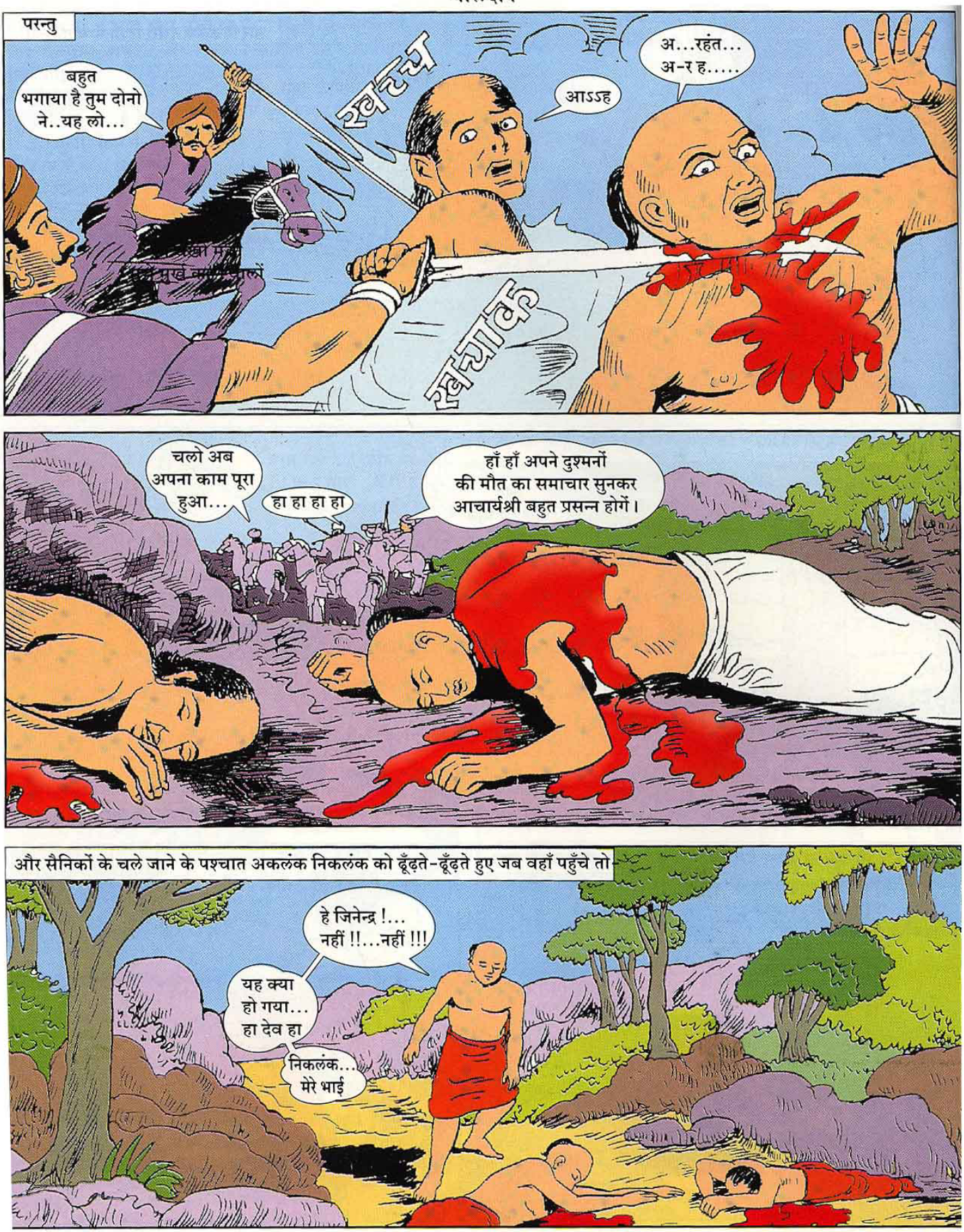

Version 001: remember to check http://www.AtmaDharma.com for updates

Please inform us of any errors on rajesh@AtmaDharma.com

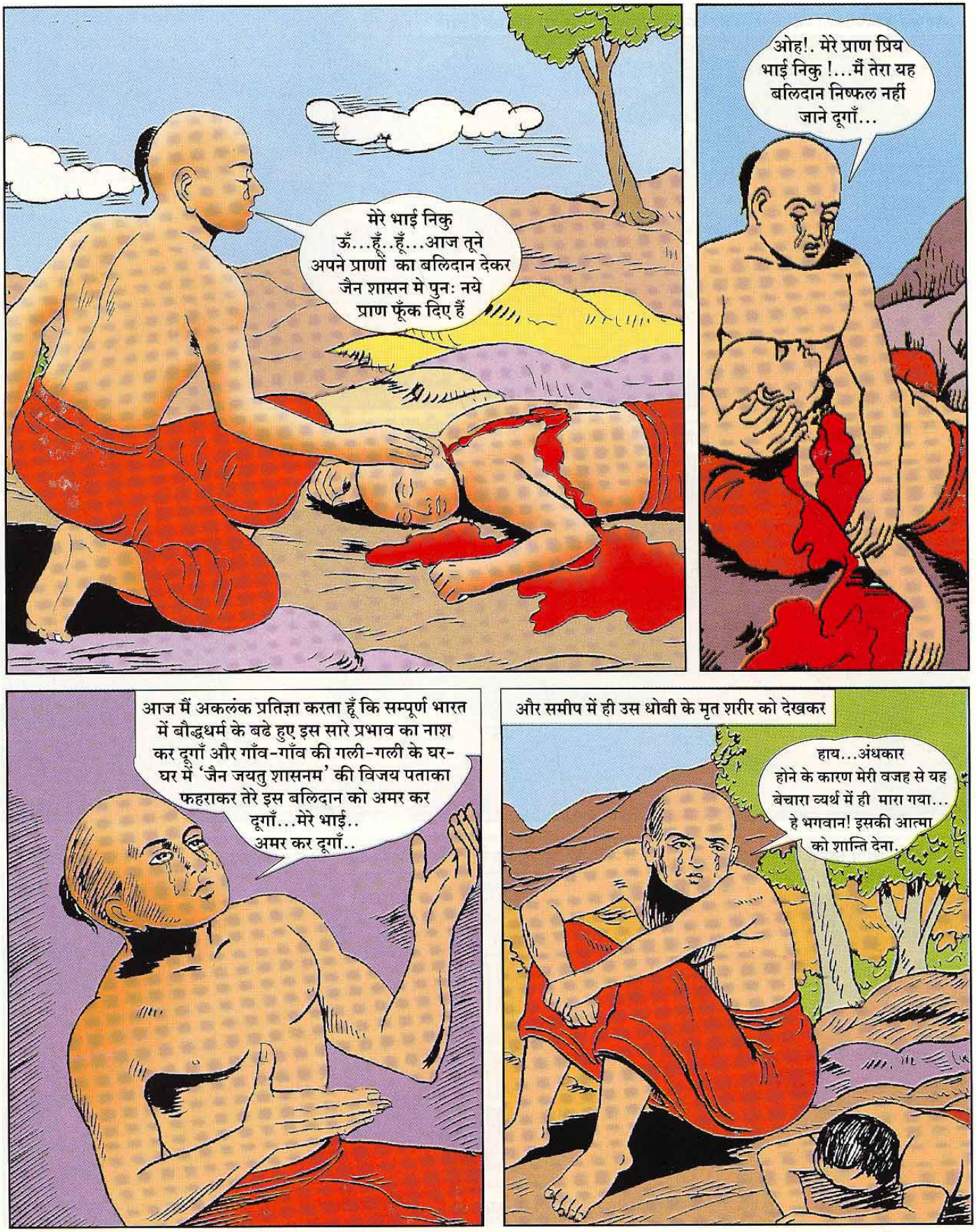
मेरे भाई निकु
ऊँ...हूँ..हूँ...आज तूने
अपने प्राणों का बलिदान देकर
जैन शासन मे पुनः नये
प्राण फूँक दिए हैं
ओह!. मेरे प्राण प्रिय
भाई निकु !...मैं तेरा यह
बलिदान निष्फल नहीं
जाने दूगाँ...
आज मैं अकलंक प्रतिज्ञा करता हूँ कि सम्पूर्ण भारत
में बौद्धधर्म के बढे हुए इस सारे प्रभाव का नाश
कर दूगाँ और गाँव-गाँव की गली-गली के घर-
घर में 'जैन जयतु शासनम' की विजय पताका
फहराकर तेरे इस बलिदान को अमर कर
दूगाँ...मेरे भाई..
अमर कर दूगाँ..
और समीप में ही उस धोबी के मृत शरीर को देखकर
हाय...अंधकार
होने के कारण मेरी वजह से यह
बेचारा व्यर्थ में ही मारा गया...
हे भगवान! इसकी आत्मा
को शान्ति देना..

बलिदान

और पंच परमेष्ठी का स्मरण करते हुए दोनों के शरीर का दाह संस्कार कर दिया-

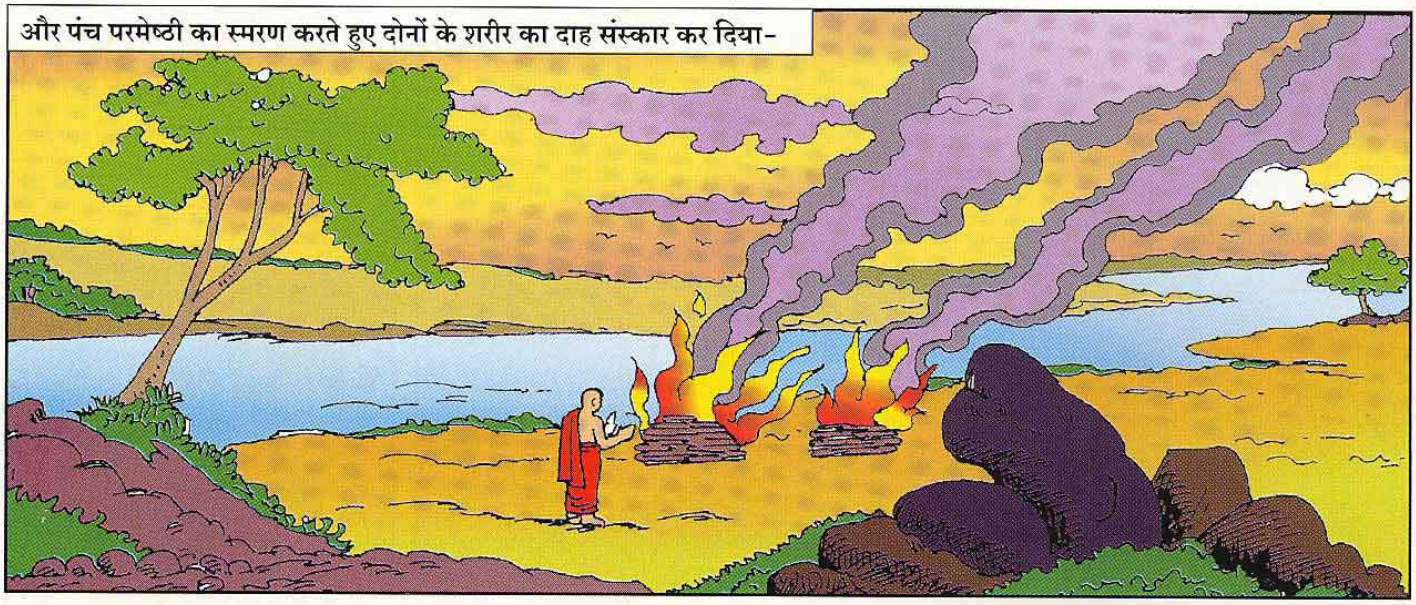

इस घटना के कुछ समय बाद में ही अकलंक कुमार ने मुनि दीक्षा ले ली-

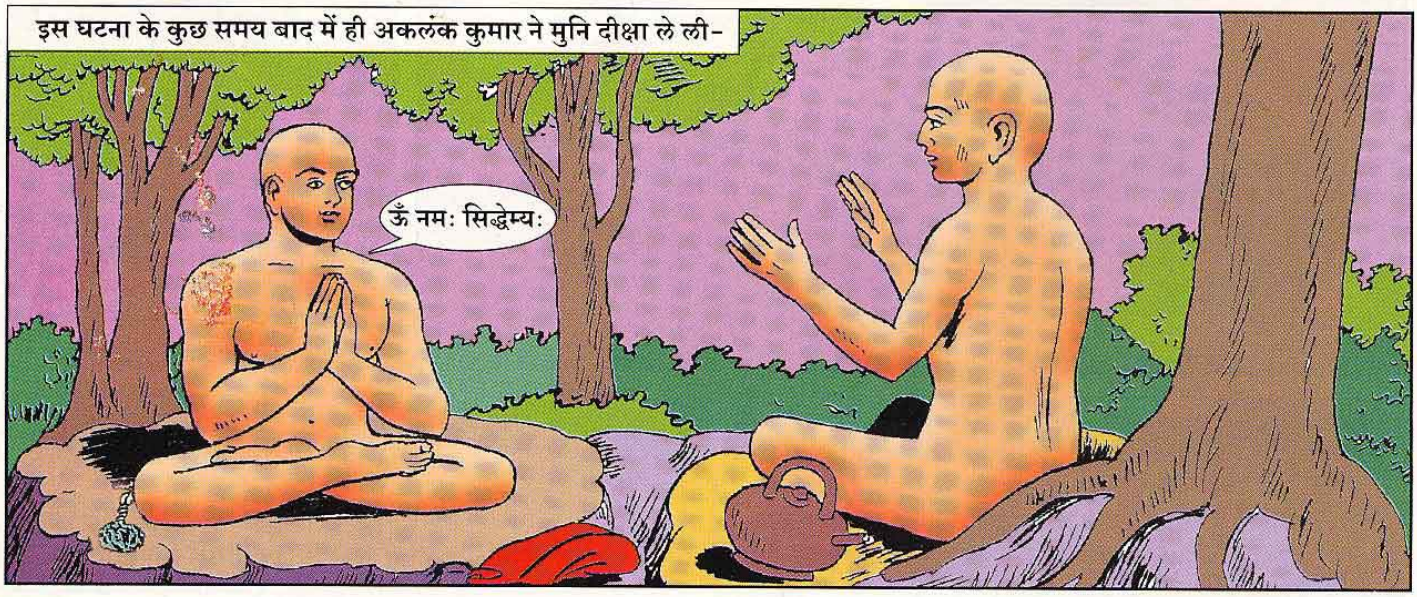

और देश-देश में बिहार कर-करके अपने अगाध ज्ञान के बल पर अनेक वाद-विवादो को करके विरोधियो के होश उड़ाकर सर्वत्र ही जिनधर्म की स्थापना करते रहे।-

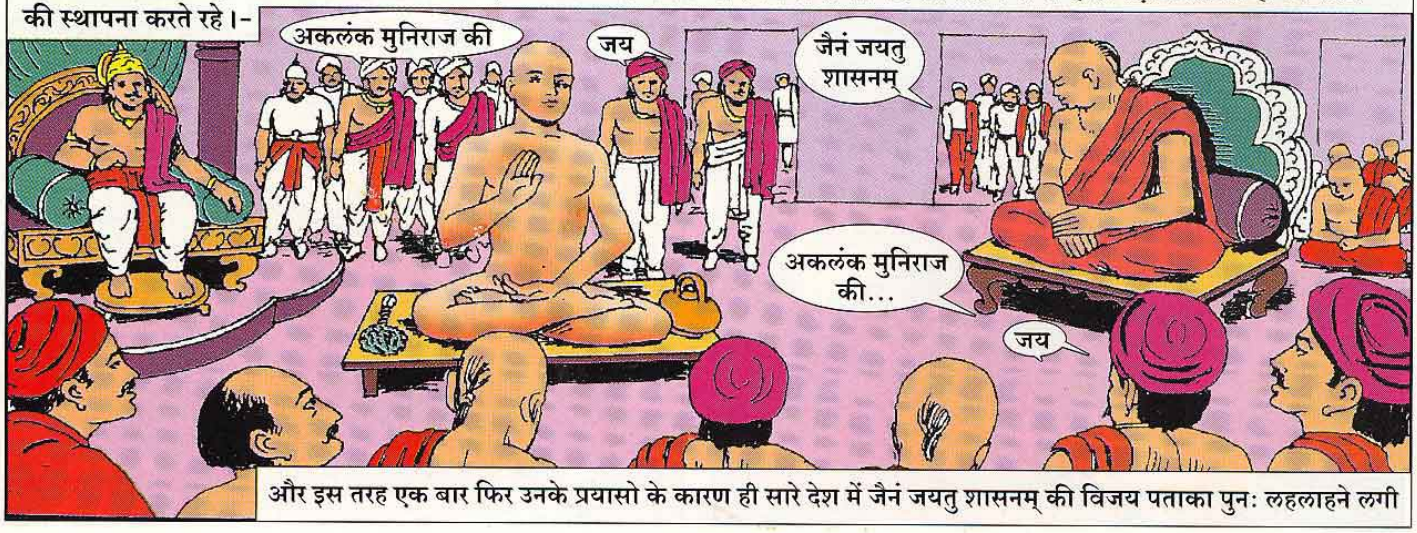

और इस तरह एक बार फिर उनके प्रयासो के कारण ही सारे देश में जैनं जयतु शासनम् की विजय पताका पुनः लहलाहने लगी

बलिदान

इधर उज्जैन नगरी में वहाँ के महाराजा की दो पत्नियाँ थी-एक जिनधर्म की भक्त रानी जिनमती और दूसरी एकांत बौद्धधर्मी रानी अजिनमती।

एक दिन राजदरबार में -

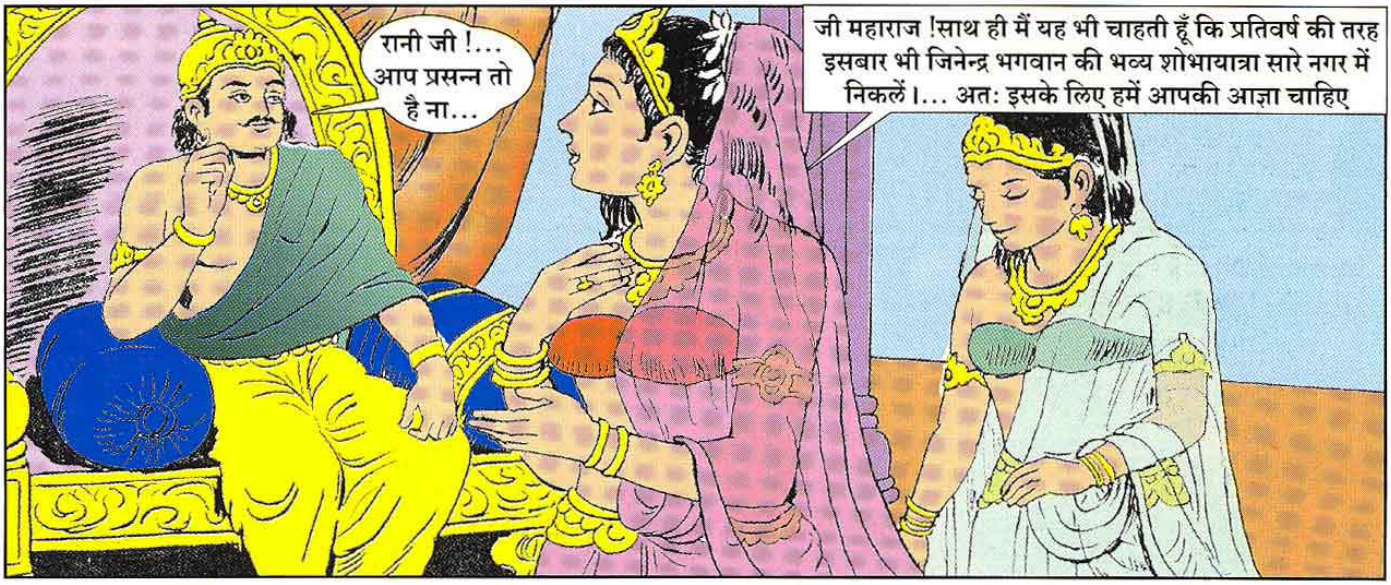

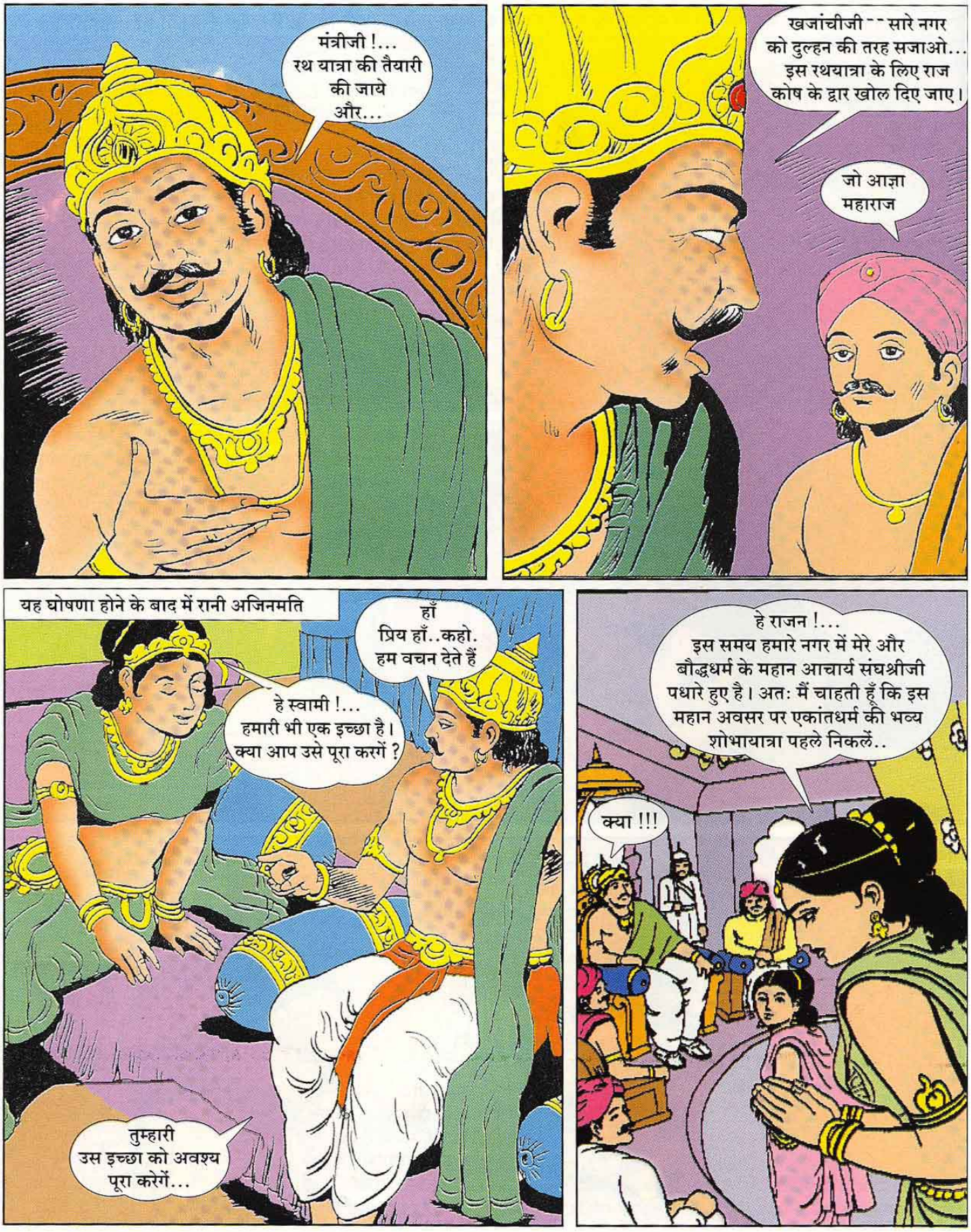
मंत्रीजी !... रथ यात्रा की तैयारी की जाये और...
खजांचीजी -- सारे नगर को दुल्हन की तरह सजाओ... इस रथयात्रा के लिए राज कोष के द्वार खोल दिए जाए।
जो आज्ञा महाराज
यह घोषणा होने के बाद में रानी अजिनमति
हाँ प्रिय हाँ..कहो. हम वचन देते हैं
हे स्वामी !... हमारी भी एक इच्छा है। क्या आप उसे पूरा करगें ?
तुम्हारी उस इच्छा को अवश्य पूरा करेगें...
हे राजन !... इस समय हमारे नगर में मेरे और बौद्धधर्म के महान आचार्य संघश्रीजी पधारे हुए है। अत: मैं चाहती हूँ कि इस महान अवसर पर एकांतधर्म की भव्य शोभायात्रा पहले निकलें..
क्या !!!

नहीं महाराज नहीं ! यदि ऐसा हुआ तो यह जिनधर्म का अपमान होगा...
उफ्फ... अब मैं क्या करुँ ?
और राजन !...यदि ऐसा नही हुआ तो मैं इसे अपने एकांत धर्म का अपमान समझूँगी

और शीघ्र ही दोनों रानियों के बीच में परस्पर में वह विवाद बढ़ने लगा-
जिनमती ! तुम अपनी हद लांघ रही हो
और अजिनमती तुम भी... समझीं

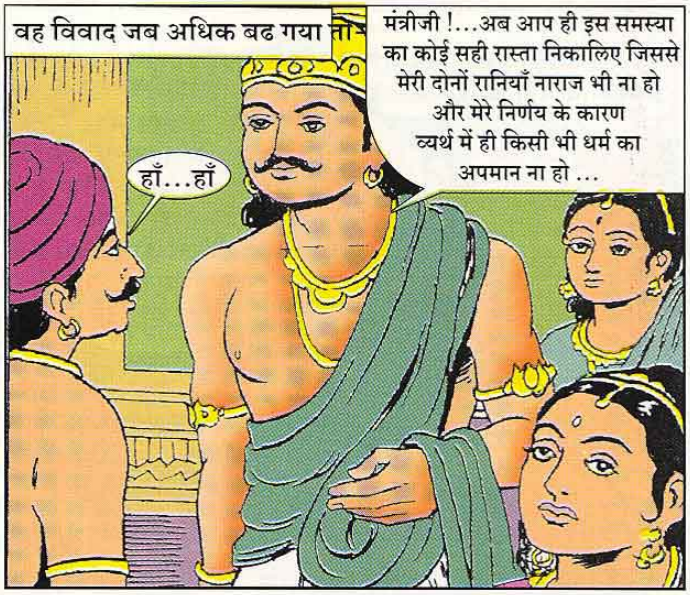
वह विवाद जब अधिक बढ गया तो-
हाँ...हाँ
मंत्रीजी !...अब आप ही इस समस्या का कोई सही रास्ता निकालिए जिससे मेरी दोनों रानियाँ नाराज भी ना हो और मेरे निर्णय के कारण व्यर्थ में ही किसी भी धर्म का अपमान ना हो ...

और थोडा सोचने के बाद
हे राजन् !...अब तो एक ही रास्ता शेष बचा है वह है कि सभा में दोनो धर्मों के सिद्धान्तों को लेकर परस्पर में वाद विवाद होना चाहिए। और उसमें धर्म की जीत होगी वही सच्चा धर्म माना जायेगा पश्चात् उसी धर्म की रथयात्रा भी पहले निकाली जाएगी और वहीं इस राज्य का राज धर्म माना जायेगा...
हूँ ऽऽ...

बोलो... तुम दोनों को यह मंजूर हैं।
मुझे भी मंजूर है
हाँ

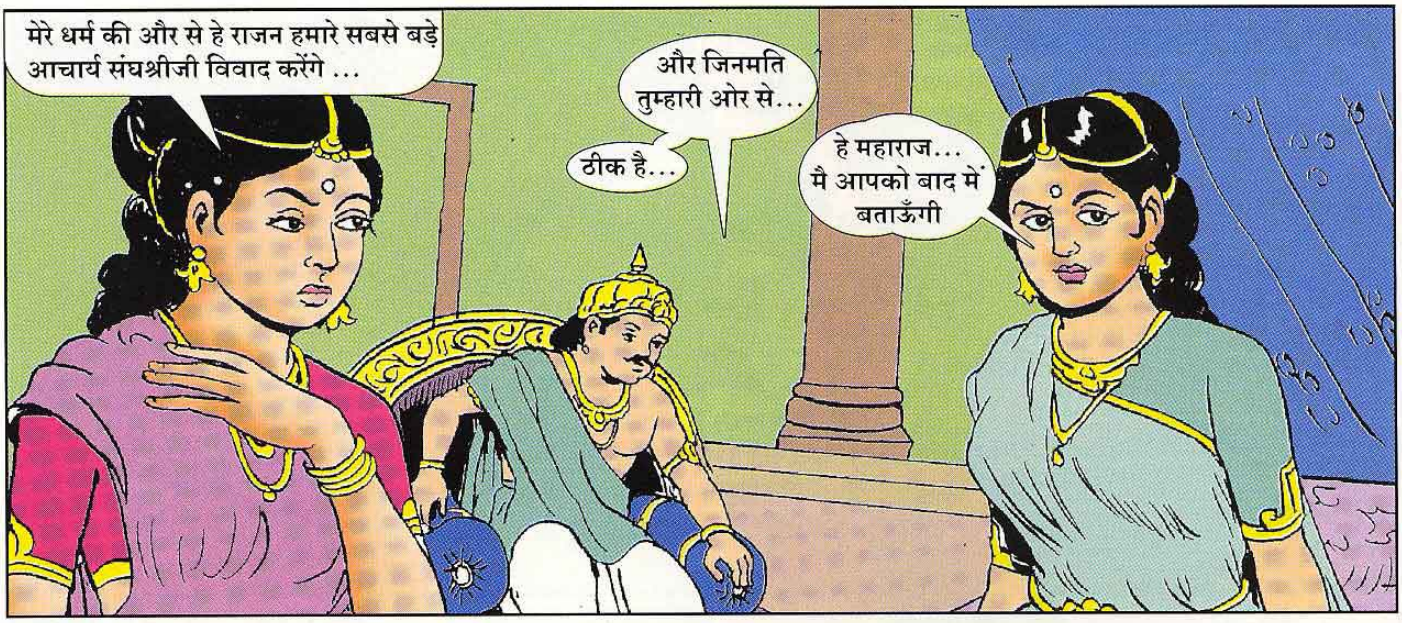
मेरे धर्म की और से हे राजन हमारे सबसे बड़े आचार्य संघश्रीजी विवाद करेंगे ...
और जिनमति तुम्हारी ओर से...
ठीक है...
हे महाराज... मै आपको बाद में बताऊँगी

संघश्री से वाद विवाद करने के लिए रानी जिनमती के पास में कोई भी योग्य व्यक्ति ना होने के कारण वह चिन्तित हो उठी और अपने सभी नगर सेठ आदि साधर्मियों को बुलाकर
अब हम क्या करे ?...कौन करेगा आचार्य संघश्री से विवाद ? हे जिनेन्द्र ! आज जोश ही जोश में मैंने जिनधर्म के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है !...रक्षा कीजिए देव रक्षा...
हाँ..हाँ.. चलो... चलो..
चिन्ता मत करो बहन। क्योंकि इस समय हमारे वन में दिगम्बर मुनिराज श्रीअकलंक देव जी विराजमान है... हम उनके पास चलकर उनसे ही वाद विवाद करने के लिए प्रार्थना करेंगे।

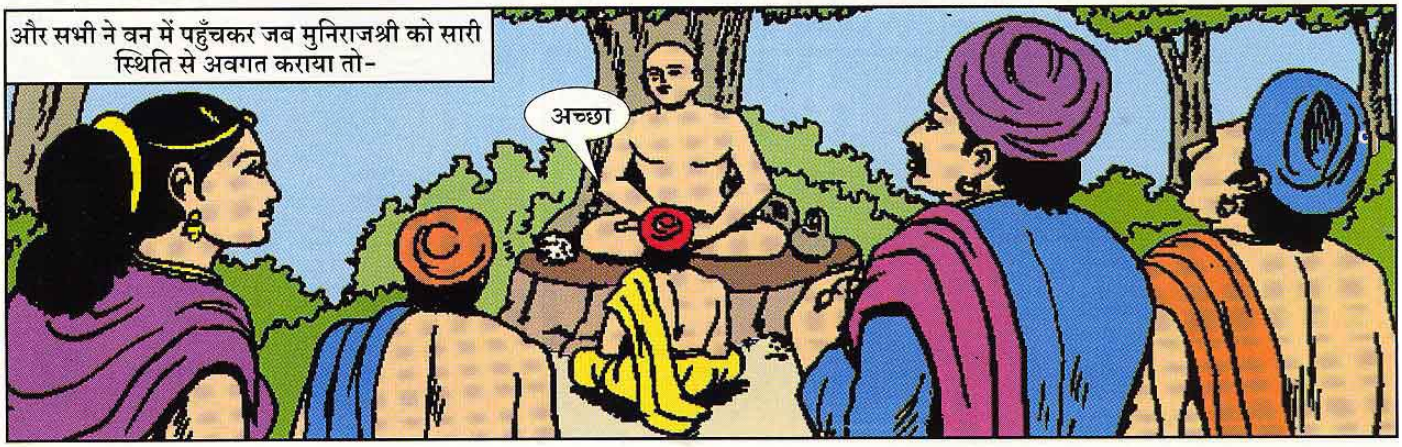
और सभी ने वन में पहुँचकर जब मुनिराजश्री को सारी स्थिति से अवगत कराया तो-
अच्छा

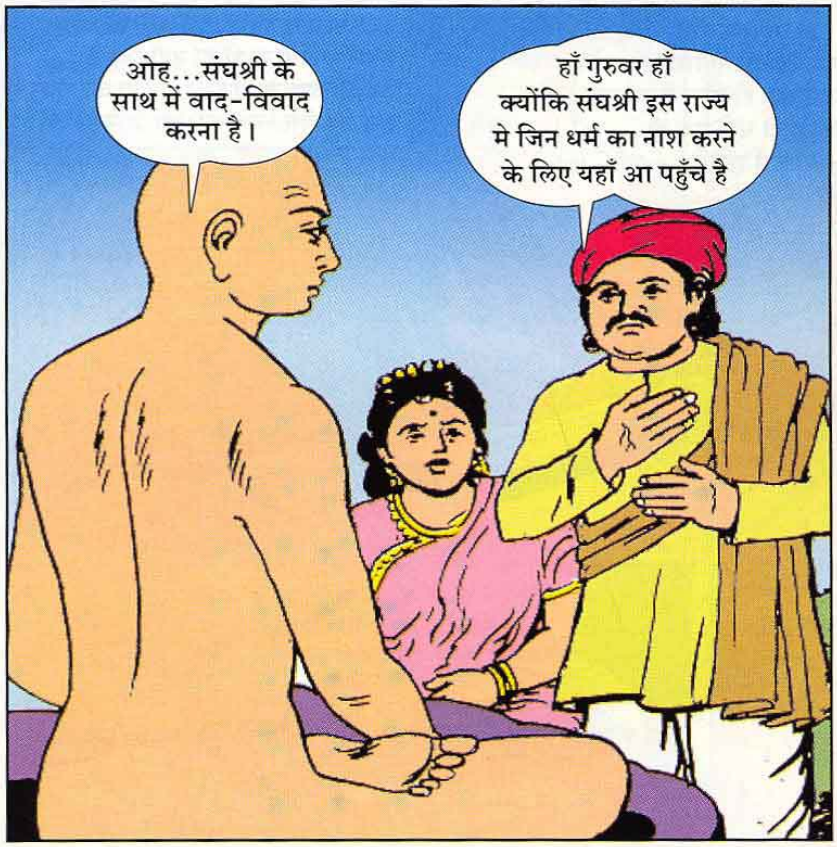
ओह...संघश्री के साथ में वाद-विवाद करना है।
हाँ गुरुवर हाँ क्योंकि संघश्री इस राज्य मे जिन धर्म का नाश करने के लिए यहाँ आ पहुँचे है

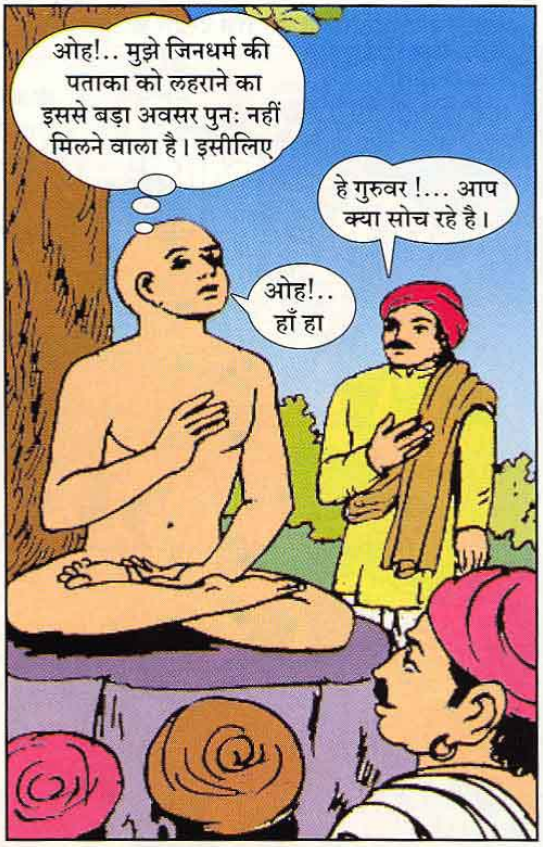
ओह!.. मुझे जिनधर्म की पताका को लहराने का इससे बड़ा अवसर पुनः नहीं मिलने वाला है। इसीलिए
हे गुरुवर !... आप क्या सोच रहे है।
ओह!.. हाँ हा

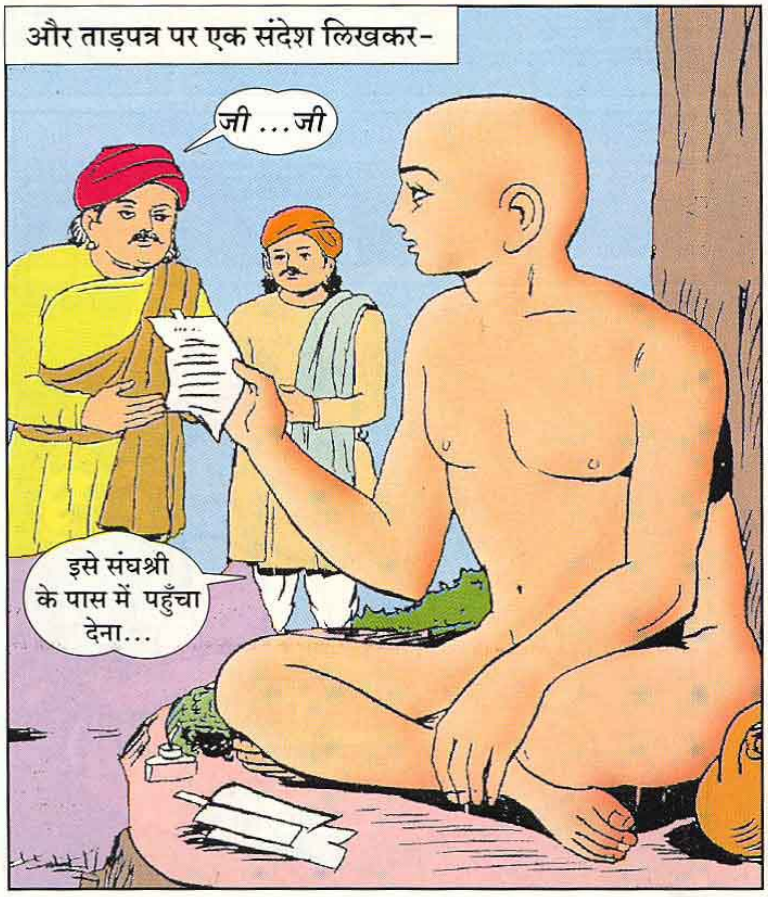
और ताड़पत्र पर एक संदेश लिखकर-
जी ...जी
इसे संघश्री के पास में पहुँचा देना...

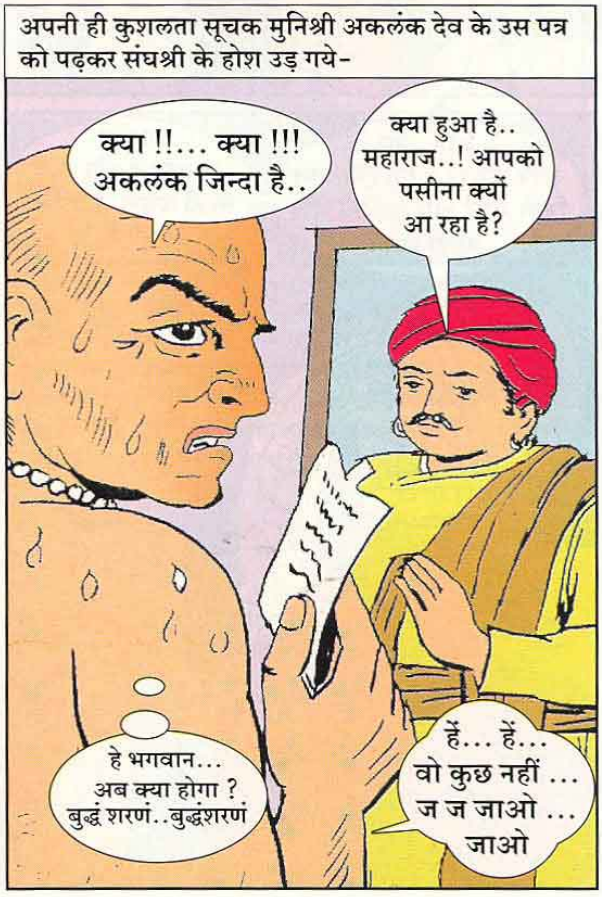
अपनी ही कुशलता सूचक मुनिश्री अकलंक देव के उस पत्र को पढ़कर संघश्री के होश उड़ गये-
क्या !!... क्या !!! अकलंक जिन्दा है..
क्या हुआ है.. महाराज..! आपको पसीना क्यों आ रहा है?
हे भगवान... अब क्या होगा ? बुद्धं शरणं..बुद्धंशरणं
हें... हें... वो कुछ नहीं ... ज ज जाओ ... जाओ

बलिदान

अगले दिन खचाखच भरे उस राज दरबार में
वाद-विवाद आरंभ किया जाए
हाँ तो अकलंक आपके अनेकान्त सिद्धान्त के अनुसार एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध दो धर्म एक ही साथ में रहते है।
नहीं आचार्य नहीं !...वे धर्म उस वस्तु में सर्वथा विरुद्ध होकर नहीं रहते है अपितु कदाचित किसी अपेक्षा को लेकर रहते है। जैसे नित्य धर्म एवं अनित्य धर्म।

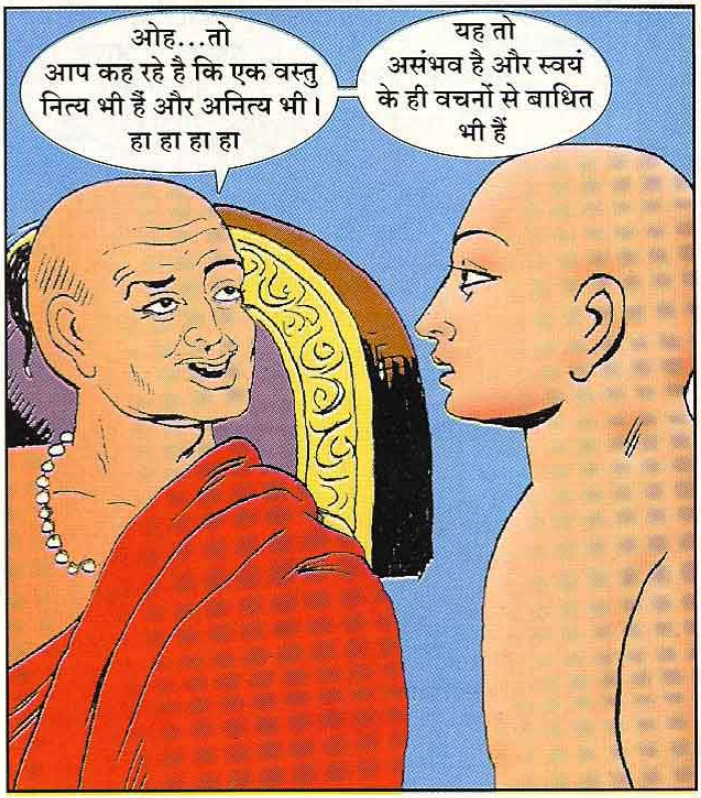
ओह...तो आप कह रहे है कि एक वस्तु नित्य भी हैं और अनित्य भी। हा हा हा हा
यह तो असंभव है और स्वयं के ही वचनों से बाधित भी हैं

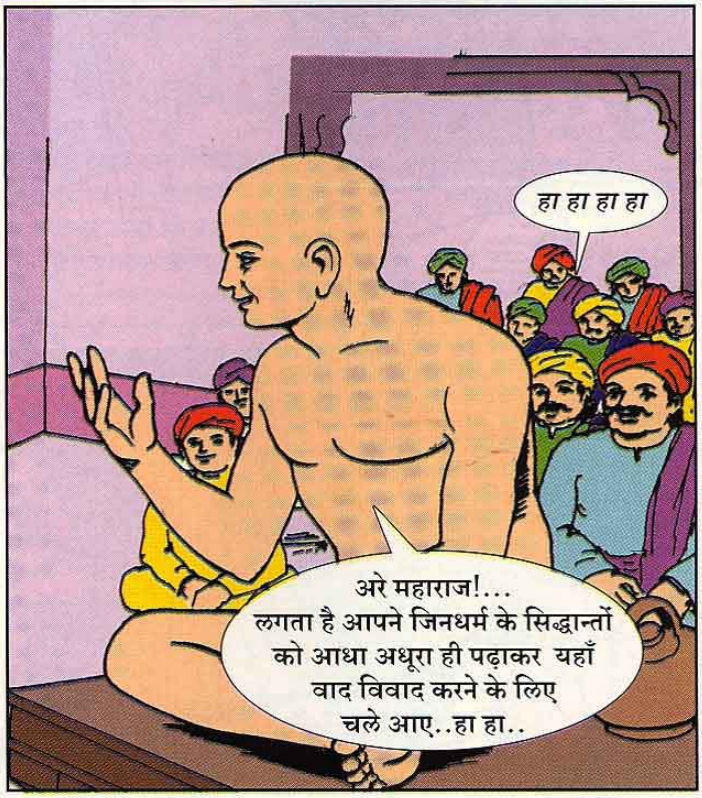
हा हा हा हा
अरे महाराज!... लगता है आपने जिनधर्म के सिद्धान्तों को आधा अधूरा ही पढ़ाकर यहाँ वाद विवाद करने के लिए चले आए..हा हा..

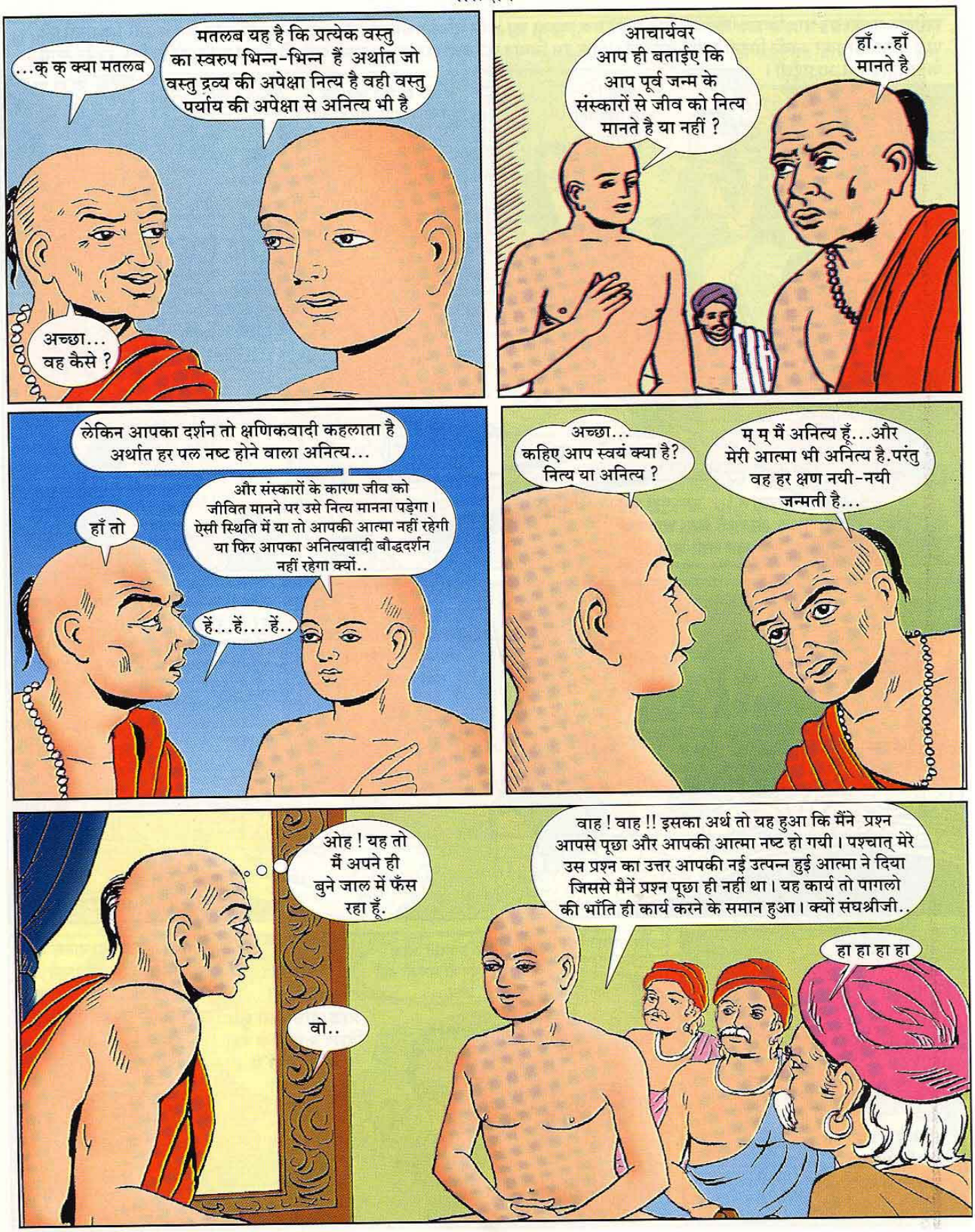
...क् क् क्या मतलब
मतलब यह है कि प्रत्येक वस्तु का स्वरुप भिन्न-भिन्न हैं अर्थात जो वस्तु द्रव्य की अपेक्षा नित्य है वही वस्तु पर्याय की अपेक्षा से अनित्य भी है
अच्छा... वह कैसे ?
आचार्यवर आप ही बताईए कि आप पूर्व जन्म के संस्कारों से जीव को नित्य मानते है या नहीं ?
हाँ...हाँ मानते है
लेकिन आपका दर्शन तो क्षणिकवादी कहलाता है अर्थात हर पल नष्ट होने वाला अनित्य...
हाँ तो
और संस्कारों के कारण जीव को जीवित मानने पर उसे नित्य मानना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में या तो आपकी आत्मा नहीं रहेगी या फिर आपका अनित्यवादी बौद्धदर्शन नहीं रहेगा क्यों..
हें...हें....हें..
अच्छा... कहिए आप स्वयं क्या है? नित्य या अनित्य ?
म् म् मैं अनित्य हूँ...और मेरी आत्मा भी अनित्य है.परंतु वह हर क्षण नयी-नयी जन्मती है...
ओह ! यह तो मैं अपने ही बुने जाल में फँस रहा हूँ.
वो..
वाह ! वाह !! इसका अर्थ तो यह हुआ कि मैंने प्रश्न आपसे पूछा और आपकी आत्मा नष्ट हो गयी। पश्चात् मेरे उस प्रश्न का उत्तर आपकी नई उत्पन्न हुई आत्मा ने दिया जिससे मैनें प्रश्न पूछा ही नहीं था। यह कार्य तो पागलो की भाँति ही कार्य करने के समान हुआ। क्यों संघश्रीजी..
हा हा हा हा

इसीतरह उनका यह वाद विवाद परस्पर में छह महीने तक चलता रहा।और मुनिश्री अकलंक देव एक एक करके बौद्ध धर्म के सारे सिद्धान्तों की पोल खोल खोलकर उनकी मिट्टी पलीत करते रहे। उनके इस विवाद की चर्चा को सुनकर सभी देशों की जनता उसे सुनने के लिए उज्जैन नगरी के राजदरबार में आ पहुँची।

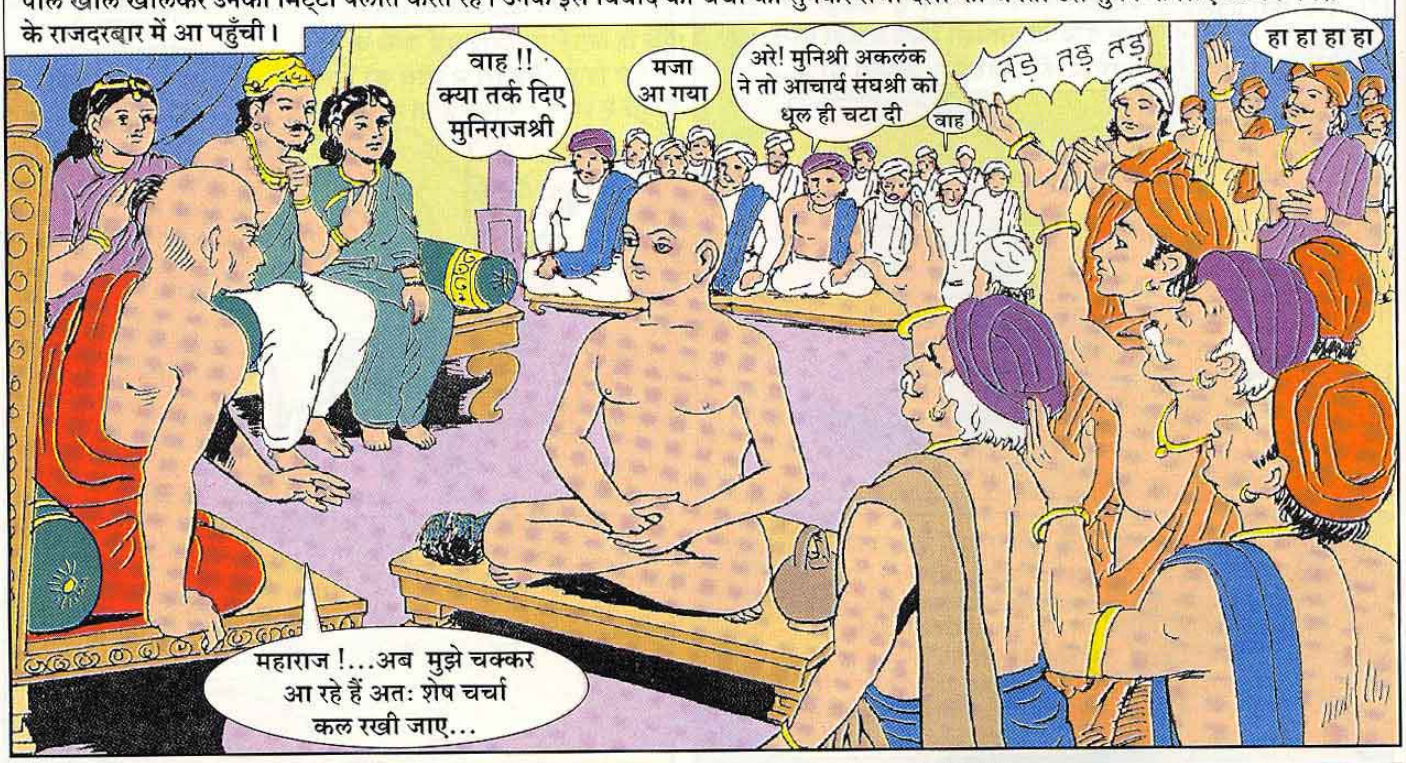

बलिदान

हाँ तो संघश्रीजी !... आप नित्य है या अनित्य
अन्दर से
आत्मा सर्वथा क्षणिक है ।... परन्तु अगले समय के लिए अपने संस्कार छोड़ जाती है ऽऽऽ...औ..
तभी बीच में
क्या कहा संघश्रीजी!... आपने जो कहाँ वह जरा फिर से कहिए। ... क्योंकि सभी नागरिक और मैं उसे साफ-साफ नहीं सुन सकें..
बोलिए संघश्रीजी ...बोलिए मौन क्यों हो गये
लेकिन अंदर से कोई भी आवाज नहीं आई
कुछ देर तक जब इसका उत्तर नहीं मिला तो राजाज्ञा से पर्दा खोला गया
हें हें यह क्या...
अरे रे !... संघ श्री जी कहाँ चले गए
क्या !... वह मटका तो नहीं बन गये बुद्धंशरणं बुद्धंशरणं
ओह ! यह तो धोखा हैं।
इस सबका क्या रहस्य है...राजन ! मैं बताता हूँ। संघश्रीजी ने स्वयं को हारते हुए देखकर रात्रि में विद्या के बल से एक तारादेवी को सिद्ध किया लेकिन जिनशासन की भक्त एक देवी ने आकर मुझे सारी बात बता दी और नरेश.. चूँकि देवगण किसी भी बात को पुनः नहीं बोलते है अतः मैंने मटके में बैठी हुई उस तारादेवी से पुनः बोलने के लिए कहाँ जिससे सारा रहस्य अपने आप ही खुल गया
अरे रे रे...धर्म के नाम पर इतना बड़ा दम्भ ... ऐसा कपट.. छि...छि धिक्कार हैं ऐसे झूठे अहंकार और धर्म को...
जिनधर्म की जय
मुनिराजश्री अकलंक देव की
जय जय जय
जय जय जय
जैनं जयतु शासनम
हमारे ही गुरु ने हमें धोखा दिया ... अब हम इस धर्म में नही रहेगें..
हाँ हाँ हम इसे त्याग देगें

पश्चात संघश्री,रानी अजिन मति एवं अन्य बौद्ध धर्म के हजारों श्रद्धालुओं ने जिनेश्वरी धर्म को अंगीकार करके अपना आत्म कल्याण करने लगें।

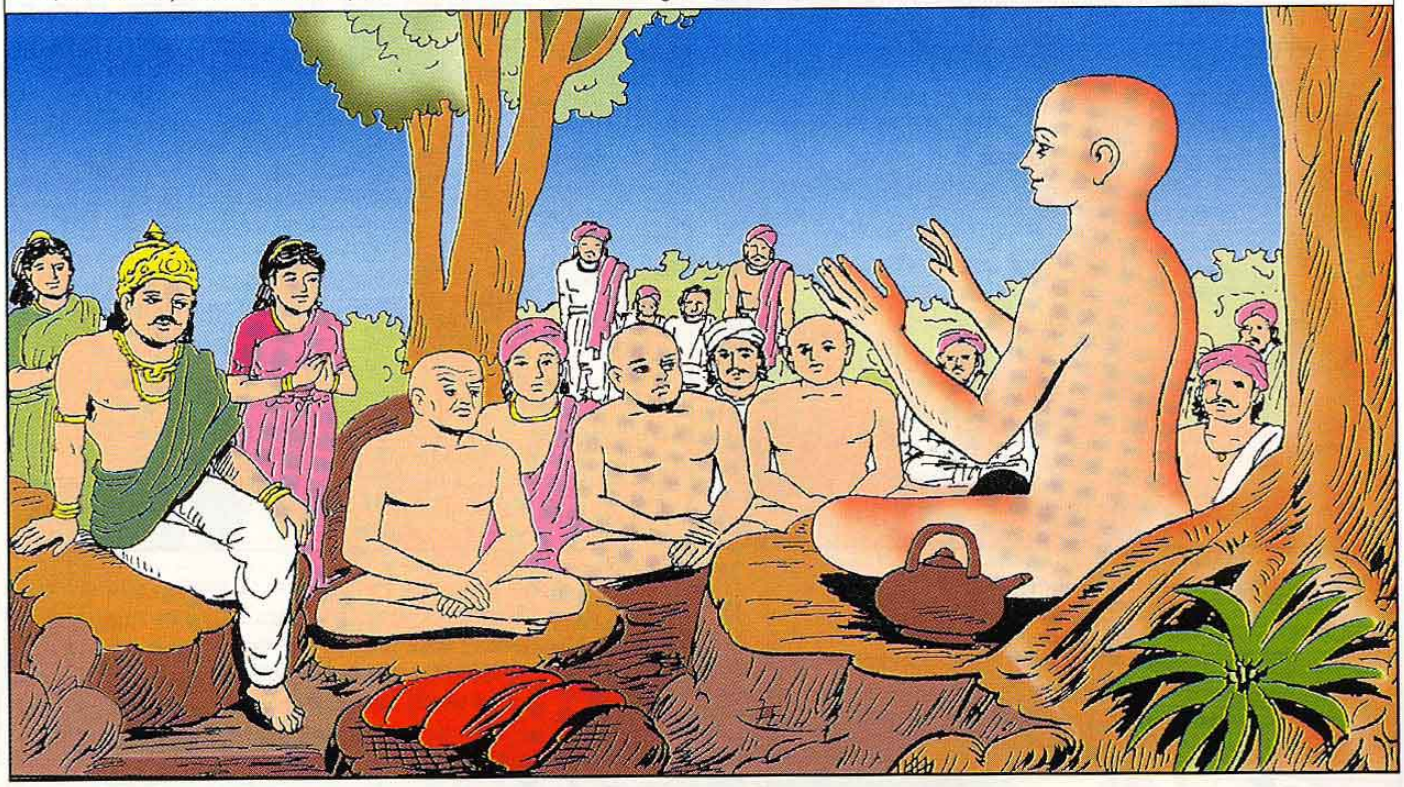

और अगले दिन अति ही हर्षोल्लास पूर्वक अपने विशाल वैभव एवं ऐश्वर्य के साथ में जिनेन्द्र भगवान की रथ शोभायात्रा सारे नगर में निकाली गई

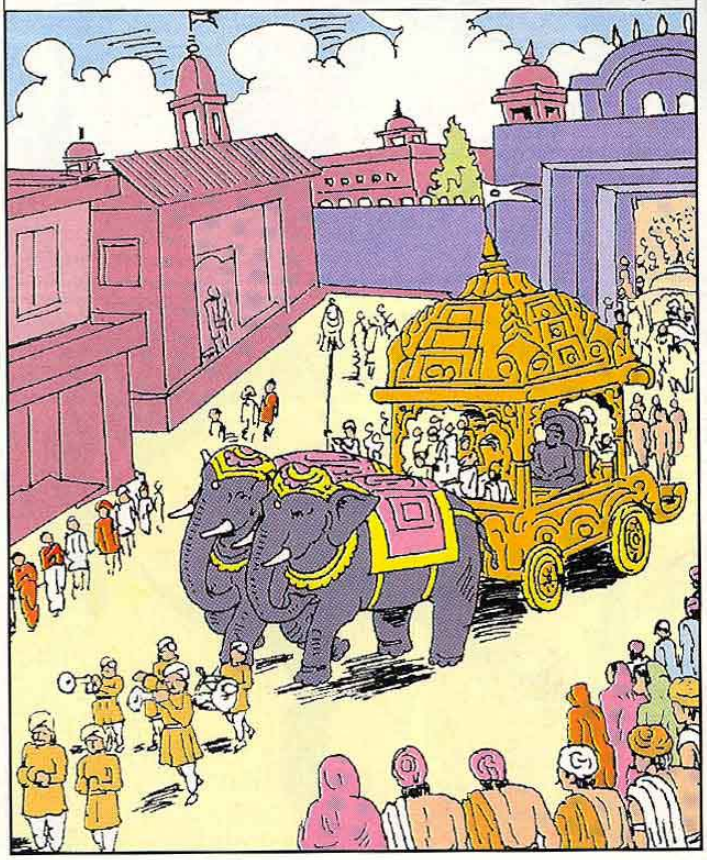

इसी तरह से अकलंक देव स्थान-स्थान पर जाकर अन्य मतों का खण्डन करते रहे। उनके प्रभाव से सारे भारत वर्ष में जैन धर्म की महान प्रभावना हुई। शिक्षा के लिए उपयुक्त साधन उपलब्ध ना होने के कारण उन्हें देशांतर में जाकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी और जिनधर्म के लिए अपने भाई निकलंक के प्राणों का बलिदान भी करना पड़ा था इसीलिए उनके प्रभाव मात्र से सहज ही जिन शिक्षा अनेक विद्यालय उपलब्ध हो गये।

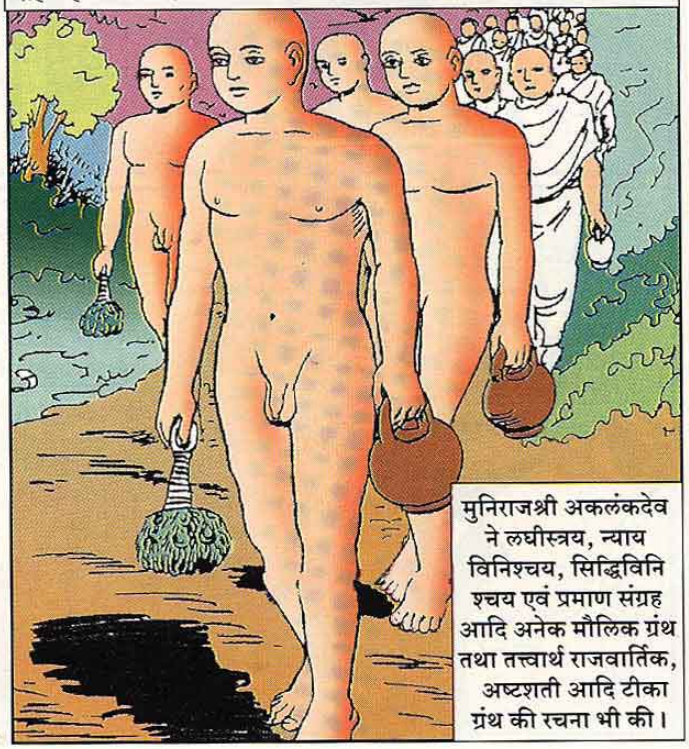

मुनिराजश्री अकलंकदेव ने लघीस्त्रय, न्याय विनिश्चय, सिद्धिविनिश्चय एवं प्रमाण संग्रह आदि अनेक मौलिक ग्रंथ तथा तत्त्वार्थ राजवार्तिक, अष्टशती आदि टीका ग्रंथ की रचना भी की।

ट्रस्ट के द्वारा प्रकाशित होनेवाली चित्रकथाओं की सूची

- परिवर्तन
- आत्मलगन
- ग्वाला बना भगवान
- दिगम्बर-श्वेताम्बर
- ब्रह्मा-विष्णु-महेश
- करुण-क्रन्दन
- रसिया
- वीर रावण
- भरत-बाहुबली
- श्रेष्ठ विवाह
- सच्ची मित्रता-1
- धर्म परीक्षा
- णमोकार महामंत्र
- सात सौ कोडी
- बैर
- आटे का मुर्गा
- यदुवंशी वसुदेव
- मेरी जीवन गाथा
- दुष्ट काष्ठांगार
- वीर वरांग कुमार
- बलिदान
- कामदेव प्रद्युम्न
- श्री कृष्णा-1
- श्री कृष्णा-2
- राम-रावण
- अग्नि परीक्षा
- शासननायक महावीर
- कौरव-पाण्डव
- महाभारत-1
- महाभारत-2
- वीर हनुमान
- महासती अंजना
- शीलवान सुदर्शन
- उपसर्गजयी सुकमाल
- भरत का भारत
- कामदेव नागकुमार
- अदालत-1
- अदालत-2
- अडिग आस्था
- जैसा करेगा वैसा भरेगा
- कामदेव
- परिवर्तन की रात
- जीवन जीने की कला